तृतीय अध्याय

"तमस" उपन्यास और सांप्रदायिकता

3.1 सांप्रदायिकता की संकल्पना।—

3.2 भारतीय जनता की रचना और "तमस"-।

3.3 मानवीयता और संस्कृति से युक्त हिन्दू धर्म और "तमस"-।

3.4 इस्लाम धर्म और "तमस"-।

3.5 सिक्ख धर्म और "तमस"-।

3.6 ईसाई धर्म और "तमस"।_

3.7 हिन्दुओं की कमजोरी और "तमस"।_

3.8 काँग्रेस की स्थिति और "तमस"।_

3.9 हिन्दू - मुसलमान भेदभाव और "तमस"।_

3.10 भारत विभाजन - और "तमस"-

3.11 अविचारों की आँधी और "तमस"-

3.12 ऐतिहासिक संदर्भ और "तमस"-

3.13 निष्कर्ष -

3.14 संदर्भ सूची .

- - -

तृतीय अध्याय

तमस उपन्यास और सांप्रदायिकता

3.1 सांप्रदायिकता की संकल्पना :-

प्रस्तावना :- भारत धर्म प्रधान देश है। इसमें अनेक धर्मोंके लोग रहते हैं। उनके मन में धर्म की भावना ओत-प्रोत हैं। यहाँ प्राचीन कालसे नाना धर्म एवं धार्मिक संप्रदायों का निर्माण हुआ। इसमें उदार शिक्षा, उच्च आदर्श तथा अध्यात्मिक ज्ञान से देश का कल्याण ही हुआ है। इसी कारण धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरूषार्थोंकी सिध्दी मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण है। इन चारोंका पालन करने से आदमी सुखी बनता है। धर्म विश्वबंधुत्व का संदेश देता है। और मानवजीवन को उदात्त बना देता है। धर्म के पालन से व्यक्ति के मन में मधुर भावों की निर्मिती होती हैं। और भक्ति का उदय होता है। धर्म मनुष्य का एक उपलक्ष्य है। इस कारण इस देशमें अनेक महापुरूषोंने धर्म की विभिन्न व्याख्याएँ तथा विभिन्न संप्रदायोंकी रचना की है। संप्रदायों के कारण धर्म के प्रति रूचि उत्पन्न होती है।

धर्म 'धृ' धातु से बना है। वह शक्ति तथा गुण धारण करता है। पतंजली ने कहा है - "योग्यतावाच्छिन्ना धर्मिणः शक्तिरेव धर्मः" जिसका अर्थ है धर्मीकी योग्यतायुक्त शक्ति ही धर्म है।"[1]

महर्षि कनाद ने कहा है - जिसके द्वारा उन्नति हो और अंत में मोक्ष प्राप्त हो वही धर्म है।

साधारण जनता के शास्त्रकारोंने बताया है कि "वेदविहित कर्म धर्म है और वेद निषिध्द कर्म अधर्म है।" हिन्दु, मुसलमान और ईसाई अपनी-अपनी धार्मिक पुस्तकों के वचनों से बध्द है। बाईबल में जो लिखा है वह ईसाइयों के लिए धर्म है, जो अविहित है वही अधर्म है। कुरान में जो लिखा है वह मुसलमानों के लिए धर्म है और जिसका निषेध है वही अधर्म है।

धर्म के दो प्रकार महर्षियोंने बताये हैं -

1) साधारण धर्म। और

2) विशेष धर्म।

साधारण धर्म मनुष्य के लिए होता है - हिन्दू-मुसलमान, ईसाई सभी साधारण धर्म के लक्षण है। विशेष धर्म के अन्तर्गत मन, अवस्था, काल आदि भेद आते हैं। धर्म के दो कार्य हैं - (1) नैमित्तिक - कभी कभी किए जानेवाले कार्य। और (2) नित्य - रोज किए जानेवाले संध्या, भोजन आदि।

धर्म के तीन मार्ग हैं : (1) ज्ञानमार्ग (2) कर्ममार्ग (3) भक्तिमार्ग इसके अलावा (1) राजधर्म (2) प्रजा धर्म (3) नारी धर्म (4) गुणधर्म (5) वर्ण धर्म ये मूल धर्म हैं।

संप्रदाय की व्युत्पत्ति और व्याख्या -

"संप्रदाय का अर्थ है - धर्म का विशेष पथ।"

सांप्रदायिकता का अर्थ है -'साधन यथा रूढ़।'

धर्म के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोई न कोई 'पथ' अपनाना पड़ता है तो वह है संप्रदाय। संप्रदाय बनते हैं, बदलते हैं और मिट भी जाते हैं। धर्म भूमि है। उसके बदलने और नष्ट होने का अर्थ है प्रलय। वह नित्य है, सत्य है।"[2]

धर्म और संप्रदाय :-

धर्म आत्मा है तो विविध संप्रदाय उसके शरीर हैं। सभी शरीरों में आत्मा एक है।

संप्रदायों का निर्माण आचार्योंने किया है। उसका विभाजन साहित्य, दर्शन और धर्म के आधारपर किया जा सकता है।

धर्म संप्रदायों में (1) जैन धर्म (2) बौध्द संप्रदाय (3) इस्लाम संप्रदाय (4) ईसाई संप्रदाय (5) सिध्द संप्रदाय (6) नाथ संप्रदाय (7) संत संप्रदाय (8) सूफी संप्रदाय (9) शैव संप्रदाय (10) शाक्त संप्रदाय (11) वैष्णव संप्रदाय (12) आचार्य संप्रदाय (13) चैतन्य संप्रदाय और इन संप्रदायों के अनेक उपसंप्रदाय भी हैं। जो सभी भारतवासी हैं।

धर्म के बारे में राधा कृष्ण ने कहा है "जब तक मनुष्यों पर धर्म का प्रभाव रहा, समाज में अशिक्षा और अन्ध विश्वासों के रहते हुए भी, आज की अपेक्षा अधिक शांति और सद्भाव था लेकिन जो जो ज्ञान की वृध्दि हुई धर्म का अनादर बढ़ा। समाज में अशांति की भी वृध्दि होती गयी।"[3] क्रोसो ने धर्म को पौराणिक अंधविश्वास बताया है। तो लेनिन धर्म को पतनशील समाज का नशा बतलाते हैं। "मनुष्य के भीतर बसनेवाले ईश्वरीय रूप की उपेक्षा से आदमी बीमार हो गया है। उसकी आत्मा रूग्ण हो गयी है।"[4] आज ये विचार धर्म की विकृतावस्थापर प्रकाश डालते हैं जो आज का सत्य है।

3.2 भारतीय जनता की रचना :- और 'तमस'

भारत के मूल निवासी कौन है? इसके बारेमें विभिन्न मत है। पश्चीम के विद्वान कहते है कि आदिमानव का जन्म भारत में नही हुआ, तो इस देश में जो भी लोग बसे, वे बाहर से आकर बसे। नीग्रिटो, औष्ट्रीक, द्राविड़ और आर्य सभी वंशों के लोग बाहर से आये। लेकिन सबसे युक्ति संगत अनुमान यह है कि आदमी सबसे पहले दक्षिण भारत में जन्मा होगा। अथवा शिवालिक पर्वत के पास। और इस देश के मूल निवासी द्रविड हैं। और भारत का सनातन धर्म जो हैं वह द्रविडों के इतिहास में पाया जाता है।

आर्यों के आगमन से दो संस्कृतियों के मिश्रण से जनसमुह की जो रचना हुयी उसे हम भारतीय जनता कहते है। भारत भूपर अनंत काल से विभिन्न जातियों एवं लोगों का समन्वय हुआ। अगर इतिहास देखें तो कम से कम ग्यारह (ईसाई, मुसलमान छोंडकर) जातियोंका आगमन एवं संयोग हुआ। नीग्रो, औष्ट्रीक, द्रविड, आर्य, यूनानी, यूची, शक, आभीर, हूण, मंगोल, तुर्क आदि। भारत की संस्कृति केवल एक ही जाति की देन नही है तो उसमें अनेक संस्कृतियों का मिश्रण है।

आदमी की नस्ल-पहचान :-

भारतीय समाज का परिवेश वातावरण देखने से लोगों का रूप-रंग, वेश-भूषा, रहन-सहन, भाव-विचार और जीवन दर्शन देखने से वह एक ही नस्ल के लगते हैं। उन्हें अलग अलग दृष्टि से देखना बड़ा कठिन कार्य है। 'तमस' उपन्यास में भीष्मजी ने इसका संकेतात्मक परिचय रिचर्ड और लीजा की बातचित से रोचक शैली में वर्णित किया है।

इन लोगों के विभिन्न भेद कुछ कसौटियों के द्वारा हम कर सकते हैं।

1) भाषा की कसौटीपर - भाषा विज्ञान (Philology)

2) रंग-रूप, कद, ढांचा की कसौटी - मानुषमिति (Anthropomentry)

अथवा जनविज्ञान (Anthropology) कहते है।

भाषा भेद देखकर मनुष्य की नस्ल का पता लगाना सरल कार्य है।

रंगरूप और शरीर का ढाँचा देख मूल जाति का पता लगाना कठिन कार्य है। फिर भी जनविज्ञान की कसौटीपर यह सरल बन सकता है।

जनविज्ञान की पहली कसौटी रंग की है। क्योंकि गोरे रंग के आर्य समझे जाते हैं। और जिनका रंग काला है वे आर्येतर समझे जाते हैं। खोपड़ी की लम्बाई - चौडाई से भी नस्ल का पता लगा सकते हैं। 'नाक' के आकार को देख ऊँचाई, चौड़ाई, चिपका या खड़ा होना इसपर भी हम नस्ल का पता लगा सकते हैं। जनविज्ञान ने संसार की सभी जातीयों को मुख्यतः तीन नस्लों में बँटा है।

1) गोरे रंगवाले - कौकेसियन।

2) पीले रंगवाले - मंगोलियन।

3) काले रंगवाले - इथोपियन।

भारतीय जनता में इन सभी रंग के लोगों का संमिश्रण है। जो विश्व मानवता का परिचय देते हैं। रक्त, भाषा, संस्कृति का मिलाप इसमें है।

भारत में चार प्रकार के लोग मिलते हैं। :-

1) जिनका कद छोटा, रंग काला, नाक चौड़ी और बाल घुंगराले होते हैं ये आदिवासी होते हैं और जंगलों में इनका वास्तव्य होता है। और वे आर्य और द्रविडों के आगमनपूर्व आये हैं।

2) जिनका कद छोटा, रंग काला, मस्तक लम्बा, सिर के बाल घने और नाक खड़ी वे दक्षिण भारत में रहेते हैं। और द्रविड़ी वंशज माने जाते है।

3) कद लम्बा, वर्ण गेहुआँ, दाढ़ी-मुछे घनी, मस्तक लम्बा तथा नाक पतली ये आर्य कहलाते हैं।

4) मस्तक चौड़ा, रंग काला-पीला, नाक चौड़ी और पसरी हुयी दाढ़ी-मुँछ घनी नहीं होती। ये मंगोल जाति के हैं। तिबात-चीन से यहाँ आये हैं।

भाषा की दृष्टि से

(1) आर्य भाषी।

(2) द्राविड़ भाषी।

(3) शबर किरात भाषी।

तीन प्रकार हैं।

(1) आर्य भाषी :- हिन्दी, उर्दु, बंगला, मराठी, गुजराथी, उडिया, पंजाबी, असमी, गुरखाली, कश्मिरी आदि आर्य भाषाएँ हैं। जो इस संस्कृति से निर्माण हुयी हैं।

द्राविड भाषी :- इसमें तामिल, मलयालम, कन्नड, तेलगु भाषओंका समावेश होता है। बिहार के आदिवासियों की ओरॉव जाति की भाषा द्राविड़ी से मिलती जुलती है।

प्राचीन फारसी, यूनानी, लातीनी, केल्ट, त्युतनी, जर्मन और स्लाव भाषा भी संस्कृत भाषा के निकट लगती है।

लातीनी भाषा - इटली, फ्रान्स, स्पेन वंशज बोलते हैं।

केल्ट भाषा - आयरलैंड की है।

त्युतनी - जर्मन, ओलन्देज (डच), अंग्रेजी, डेन, स्वीडीश की है।

इसके बारे में भी जयचन्द्र विद्यालंकार ने कहा है, "भारत वर्ष की जनता, मुख्यतः आर्य, द्रविडी नस्लों की बनी हैं। और उसमें थोडी-सी छौंक शबर और किरात (मुंड तथा तिब्बत वर्गी) की है।"[4]

भारतभूमि इतनी रमणिय है, जो भी जाति यहाँ आयी फिर वापस चली नहीं गयी। सभी यहाँ रहे। यूची, शक, हूण, तुर्क, मोगल ये यहाँ ही रहें। आर्यों का देश सप्त-सैन्धव था (ऋग्वेद) जहाँ महंजोदरो संस्कृति पायी जाती है। लेकिन इसमें कोई ठोस आधार नहीं है। क्योंकि महंजोदरो में शिव की भक्ति एवं पूजा की जाती थी। उस सभ्यता के निर्माता पंजाब से लेकर मेसोपोटामिया तक फैले हुए थे। इन इलाकों में अन्य प्रकार के लोग भी थे जिनका इतिहास नहीं मिलता।

भारतीय समाज की नस्ल और "तमस" :-

हमारा भारत देश जिस एकता का प्रमाण है वह एकता बड़ी शक्तिशाली है। देश में विविधता में एकता पायी जाती है। यहाँ विभिन्न धर्म-जाति के लोग इकट्ठे रहते हैं। इनकी अपनी मानताएँ हैं, मूल्यें हैं। उन्ही के अनुसार वे अपना जीवन यापन करते हैं। भीष्मजी ने भारत के इस मूल इतिहास की ओर संकेत कर सांप्रदायिकता की निरर्थकता स्पष्ट की है। यहाँ के सब लोग भाई-भाई हैं। लेकिन अविवेक से अनुदारता का परिचय देते हैं। जिसके कारण यह जातिभेद का संघर्ष और भी जटिल होता जा रहा है। घृणा, द्वेष, स्वार्थ, अहंकार से युक्त इन लोगों का इतिहास देखा जाय तो वे एकही मूल जाति के लोग हैं। "तमस" में रिचर्ड लीजा को इस इतिहास के बारे में कह रहा है -

"नहीं लीजा, यह बड़ी ऐतिहासिक घाटी है। हिन्दुस्तान में आनेवाले सभी हमलावार इसी रस्ते से आये थे। मध्य एशियासे आनेवाले भी और मंगोलिया से आनेवाले भी।" रिचर्ड का उत्साह बढ़ रहा था, "अलेक्साण्डर भी इसी रास्ते से हिन्दुस्तान में आया था। आगे चलकर घाटी दो रास्तों में बँट गयी है। एक रास्ता तिब्बत की तरफ चला गया है, दूसरा अफगानिस्तान की तरफ। इसी रास्ते सौदागर लोग भी और बुध्द धर्म के प्रचारक भी दूर दूर तक जाते थे। बड़ा ऐतिहासिक इलका है। मैं तो पिछले महीनेभर से इसमें घूम रहा हूँ। इतिहासकार के लिए तो यह इलका बेशकीमत है। जगह-जगह पुरानी इमारतों के खण्डहर हैं, किले, बुध्द-विहार, सराये...."

"तुम तो रिचर्ड यों बातें कर रहें हो जैसे यह तुम्हारा अपना देश हो।"

"देश अपना नहीं है लीजा, पर इतिहास का विषय तो अपना है?" रिचर्ड ने मुस्कराकर कहा।

"इस इलाके के लोग भी बहुत पुराने जमाने से, सैकडों बरसों से यहाँ बसे हुए हैं।" फिर लीजा की ओर घूमकर बोला, "क्या यहाँ के लोगों को तुमने ध्यान से देखा है? एक ही नस्ल के लोग हैं। नाक-नक्श सब के एक जैसे हैं, एक तरह के नाक, होंठ, चौड़ा ऊँचा माथा, ब्राउन रंग की आँखें - यहाँ के लोगों की आँखें ब्राउन रंग की हैं - तुमने ध्यान दिया, लीजा?

"एक ही नस्ल के कैसे हो सकते हैं रिचर्ड, जब कि तुम कहते हो कि रास्ते से तरह-तरह के लोग आते रहे हैं।"

"नहीं - नहीं, लीजा, यही बात तो लोग भूल जाते हैं। "रिचर्ड की आवाज में उत्तेजना आ गयी थी, मानो वह अपनी किसी खोज को प्रमाणित करने जा रहा हो। "जो लोग मध्य एशियासे सबसे पहले यहाँ आये, शताब्दियों के बाद उन्हीं के नाती-पोते अन्य देशों से इधर आये। नस्ल सब की एक ही थी। वे लोग आर्य कहलाते थे और हजारों वर्ष पहले यहाँपर आये और वे भी जो मुसलमान कहलाते थे और लगभग एक हजार वर्ष पहले यहाँपर आये - एक ही नस्ल के लोग थे। सभी एक ही मूल जाति के लोग थे।"

"इन बातों को ये लोग भी तो जानते होंगे?"

"यहाँ के लोग कुछ नहीं जानते। ये वही कुछ जानते हैं जो हम इन्हें बताते हैं।" फिर थोडी देर तक मौन रहकर बोला, "ये लोग अपने इतिहास को जानते नहीं है, ये केवल उसे जीते-भर हैं।"[5]

उपर्युक्त वार्तालाप से भीष्मजीने हमारी संस्कृति के प्रथम अध्याय का परिचय देकर अपने ही लोगों की विडम्बना को प्रभावी रूपमें उद्घाटित किया है। हमारा इतिहास, हमारी मूल संस्कृति, एवं जाति का इतिहास कितना महान है। परदेशी लोग भी इतिहास से परिचित होना चाहते हैं। हमारा इतिहास हमें ही बता देते है। लेकिन हम इतने जड़ है कि इसकी कोई भी खबर-बात हमें नहीं हैं। हम संकीर्ण विचार परंपरासे ग्रस्त बन एक दूसरे का गला घोटनेपर तूले रहते हैं।

"संसार के इतिहास में इस बात के बहुत अधिक प्रमाण मिलते हैं कि किसी सुसंस्कृत देश को जीत कर जब कोई विजेता जाति वहाँ बस जाती है, तब वह वहाँकी संस्कृति को अपनी संस्कृति बना लेती है।"[6] इस उक्ति के अनुसार हिन्दुत्व और इस्लाम ने एक-दूसरे को प्रभावित किया, किन्तु यह प्रभाव केवल बाहय परिस्थितियों तक ही सीमित रहा। उसमें आत्मियता नहीं दिखाई देती।

हिन्दु ज्ञानी एवं मानसिक दृष्टि से उदार होता है किन्तु आचरण के स्तरपर वह बहुत संकीर्ण वृत्तिका होता है। और वही संकीर्णता बहुत भयानक साबित होती है। इसके विपरित मुसलमान इमान के धरातलपर उदार होते हैं लेकिन वे कट्टरवादी होते हैं। दुर्भाग्यवश इन दोनों में आत्मिक एकता कम होती गयी। दोनों में अपने ही धर्म की श्रेष्ठता सिध्द करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। परिणाम स्वरूप इनमें तनाव एवं अलगाव होता गया।

"हिन्दुओं के सामाजिक आचार सदोष होते हैं। मानसिक धरातल पर औसत हिन्दू उदार होता है। प्रत्येक धर्म को अपने ही धर्म के समान उदार समझने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती। मानसिक धरातलपर हिन्दु यह विश्वास करता है कि सारी सृष्टि एक ही ब्रहम का स्वरूप है। किन्तु आचार के धरातलपर वह मनुष्य - मनुष्य में भयानक भेद मानता है।"[7] हिन्दु के इस आचार से वह मुसलमान धर्म में भेद करने लगा। उन्हें अछूत समझने लगा।

3.3 मानवीयता और संस्कृति (तमस चित्रित) हिन्दू धर्म :-

"संस्कृति" मानव जीवन की प्राणवायू के समान है। संस्कृति का अभाव मानव-जीवन को पशु-जीवन के समान बना देता है। डॉ. नगेंद्र ने कहा है "संस्कृत अवस्था का नाम ही संस्कृति है। अर्थात मानव जीवन की वह अवस्था है, जहाँ उसके प्राकृतिक राग-द्वेषों का परिमार्जन हो जाता है।" उसी प्रकार राधाकृष्णन ने भी कहा था "भारतीय संस्कृति एक ऐसा कागज है, जिसपर अनेक संस्कृतियों ने अपनी छाप छोड़ी है और यह विभिन्न प्रकार के अभिलेखों को आत्मसात करते हुए अपने मूल स्वरूप को स्पष्ट ऊज्वल और सुरक्षित बनाए हुए है।" संस्कृति के कारण ही मानव मानवीय गुणोंसे युक्त आदर्शशील बनता है।"[8]

प्रत्येक देश और समाज की अपनी एक संस्कृति होती है। भारत की संस्कृति भी महान है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार धर्म है। धर्म का अर्थ कर्तव्य ऐसा समझा जाता है। प्रेम, दया, सेवा, शांति को आदर्श जीवन समझा जाता है। सहिष्णुता और समन्वय भारतीयों की परंपरा रही हैं। यहाँ अनेक धर्म, जाति, संप्रदाय, भाषा, विचार, सिध्दान्त, रीति-रिवाजों को माननेवाले लोग रहते हैं। उनके जीवन मूल्योंपर सामाजिक संगठन बना हुआ है। उसके गठबंधन कालांतर में भारतीय संस्कृति और समाज के विघटन के कारण बनें।

"धर्म तथा समाज के गठबंधन से धर्म के साधना, चिंतन, उपासना, भक्ति तथा आध्यात्मिक पक्ष को भूलाकर उसके एकदम व्यावहारिक पक्ष पर ही ध्यान दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि धर्म का वास्तविक स्वरूप तथा उसकी सीमाएँ भूला दी गई। इन सीमाओं तथा निश्चित स्वरूप के अभाव में धर्म विभिन्न व्यक्तियों, संप्रदायों, संस्थाओं का खिलौना बन गया। और विशृंखलता, कुरूपता, शोषण आदि के रूप में वह अपना फैलाव करता गया।"[9]

भीष्म साहनी ने "तमस" उपन्यास में चिंतन, उपासना, भक्ति के पक्षों को त्याग, मानव व्यावहारिक कैसे बनता गया इसका सुंदर चित्रण किया है। धर्म खिलौना कैसे बना? उसमें विशृंखलता, करूपता कैसे आयी, इसका सांकेतात्मक एवं स्पष्ट उल्लेख "तमस" में किया है। मानव से मानवता की हत्या कैसे होती है यह भी स्पष्ट किया है।

पीड़ित मानवता का दारूण चित्रण "तमस" में है। उपन्यास के प्रारंभ में लेखक ने विशिष्ठ मंत्रों से तथा श्लोकों से भारतीय संस्कृति का सार बता दिया है। और शांति की कामना की है। वानप्रस्थजी मंत्रोच्यारण करते हैं -

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः
सर्वे भद्राणि पश्चन्तु मा कश्चित दुःख भाग भवेत्"

इसका एक एक शब्द पूरी समझ-बुझ के साथ दिल की गहराईयों में से निकल रहा है। शान्तिपाठ भी हुआ -

"ॐ द्यौ, शान्ति पृथ्वी, शान्तिराप:

शान्तिरौषधय: शान्ति वनस्पति:"

सचमूच ऐसा जान पडने लगा, जैसे शान्ति का लौकिक प्रभाव वायु मण्डल में छाने लगा है। समस्त के चर-अचर जगत के सुख की कामना की जाती -

"सब पर दया करो भगवान

सब पर कृपा करो भगवान...."[10]

उपनिषदों के मत्रों के बारेमें भीष्मजी ने कहा है - "ईशोपनिषद का लेखक जब संपूर्ण मानवता के कल्याण की कामना से जब "सर्वे भवन्तु सुखिन:" कहता है, तब मेरे लिए समस्त भौगोलिक और जाति, रंग, धर्म, राष्ट्र आदि की सीमाएँ तोड़ देता है, और थोड़ी देर के लिए मुझे ऐसे धरातल पर उठा ले जाता है, जहाँ पहुंचकर मैं भी संपूर्ण मानवता के कल्याण की कामना कर सकता हूँ।[11]

जो हिन्दू धर्म कभी समाज के सर्वांगिण विकास में सहायक था, मानवता का रक्षक था, वही समाज का विघटन करनेवाला तथा मानवता का भक्षक बन गया। हिन्दू धर्म की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि भौतिक जगत और भौतिक सुख की अपेक्षा पारलौकिक सुख में आस्था रखती है। लेकिन आधुनिक युग में पाश्चात्य प्रभाव से उसमें परिवर्तन हो गये। राजनीतिक संघर्ष, आर्थिक पतन तथा समाज विघटन का रूप विकृत बना जिससे समाज की संस्कृति विकृत बनी। और अमानवीय स्तर पर संप्रदायवाद का जन्म हुआ। जिसके कारण सामाजिक जीवन की शांति तो नष्ट हुयी, लोगों की मानवता भी मर गयी। इसके बारे में रामानंद सागरजी ने "और इन्सान मर गया" इस उपन्यास में कहा है कि मुझे हिन्दुस्थान मर रहा है इसकी चिंता है, मानवता मर रही है। हजारों वर्षों के श्रम से प्राप्त की हुयी पावन भावना मर रही है। यहाँ तो इन्सान मरने के लिए ही पैदा होता है। मानव हानी का तो दु:ख नहीं है, दु:ख है मानवता, संस्कृति और चारित्र्य हानी का। "तमस" में भी यही कहा है।

यह समाज परिवर्तन लेखक भगवान की लीला मानते हैं। परिवर्तन काल चक्र का ही अंग मानते हैं। "साम्राज्य बनते हैं, फिर टूट जाते हैं, फिर नये साम्राज्य खड़े हो जाते हैं, वे भी धाराशायी हो जाते हैं, और उनका स्थान कोई और साम्राज्य ले लेते हैं, किसी एक कालखंड में उठनेवाले साम्राज्य या डूबनेवाले साम्राज्य का महत्व क्या है। यह चक्र चलता रहता है। संस्कृतियाँ पनपती हैं, फिर काल के महागर्ता में डूब जाती है। यह सब उसकी केवल लीला नज़र आये।"[12]

इस प्रकार आज़ादी के पूर्व लाखों लोगों के दिल टूटे। और आज़ादी के बाद भी। यहाँ जो परिवर्तन हुए उससे लाखों लोगों के दिल को धक्का भी लगा। इस परिस्थितियोंपर विजय प्राप्त करने के लिए तरह तरह के दानवी तथा शैतानी वृत्ति समाज में आज भी परिलक्षित होती है। 'तमस' में एक मजदूर पात्र कहता भी है - "हम पहले से भी बोझा ढ़ोते आये है और आज़ादी के बाद भी ढ़ोते रहेंगे।"

यह परिकथा नहीं है। आज हर क्षेत्र में खण्डित दृष्टिकोण ने मनुष्य को मनुष्य से अलग रखा है। यह भेद नीति भाषाभेद, जाति भेद, प्रदेश भेद, संप्रदाय भेद में बाटी गयी है। इनको मिटा देने का सही मार्ग हम नहीं खोजते। हम अपने अहं को श्रेष्ठ मानते है। संकीर्ण स्वार्थ भावनासे ग्रस्त हैं। अहम् की भावना इतनी हमपर हावी है जिससे हम एक दूसरे को पराजित करने की भावना से मन को कलुषित करते हैं। इस कारण आज का समाज खण्डित मानसिकता का शिकार है। आज राज्य प्रदेश या जाति वर्ग में यह समाज विभाजित नहीं है, तो व्यक्ति में विभाजित है।

यदि हम "मैं" से उपर उठ जाये तो कोई संघर्ष ही नहीं होगा। "समग्र मनुष्य खण्डित होते होते "मैं" में आकर सीमित हो गया। धर्म के साथ "मैं" का जुड़ जाना ही खण्डित होना है। "मैं और मेरा इस्लाम", मैं और मेरा हिन्दू धर्म", "मैं और मेरा ईसाई मत", मैं और मेरी पिछड़ी जाति", "मैं और मेरे हरिजन" इस प्रकार ये समस्याएँ बिखर गयी। मैं मुसलमान हूँ, मैं श्रेष्ठ हूँ, मुझे दूसरों को मुसलमान बनाने का अधिकार हे। मैं ईसाई हूँ, मैं श्रेष्ठ हूँ, जो इसाकी शरण में आकर क्षमा मांगेगा, उसी की मुक्ति हो सकती है। हिन्दू धर्म की शाखा भी ऐसा ही सोचती है, जिससे समस्या पैदा हो जाती है। सभी मानव को समान रूपसे भूख लगती है। सभी समान रूप से निद्रा, भय और मैथुन से आक्रान्त होते हैं। ईश्वर तो सब का एक है। सभी प्रेम करना चाहते हैं और प्रेम अद्वैत है। समग्रता की कुंजी है। मैं-तू की भावना वहाँ पनप ही नहीं सकती।"[13] यह भेद नीति हमारे मानव विभाजन की शोकान्तिका है। इसमें समग्र एकता की कामना भीष्मजी ने की है। इसी कारण उन्होंने महान संस्कृति के महान श्लोकों का संदर्भ दे उदात्त भावना एवं एकता की ओर संकेत किया है। जो आम आदमी को भी ऐसी प्रेरणा प्रदान कर मानवता की मांग करता है। क्योंकि हमारी प्राचीन संस्कृति मूल रूपमें समग्र संस्कृति है। आज हम धर्म का समग्र अर्थ भूल गये है।

"मानवतावाद का आधार मानव धर्म है। मानव धर्म का संबंध ईश्वर से न होकर मानव से है। दया, करूणा, संवेदना आदि मानवीय गुण इसमें अपेक्षित होते है। मानवतावाद न तो किसी प्रकार का धर्म है, न इसकी गिनती किसी दर्शन में की जा सकती है। मानवीय गुणों का संबंध किसी भौगोलिक क्षेत्र, काल, जाति अथवा वर्ग से न होकर अखिल सृष्टि से है। इसके लिए विशाल दृष्टि की आवश्यकता

होती है।

पर आज मानव का मानव से विश्वास उठ चुका है। मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रू मनुष्य ही बन गया है। प्राणियों में परस्पर घृणा, इर्ष्या, राग, द्वेष बढ़ रहा है। बृहत विनाश का आयोजन एवं नर संहार की योजनाएँ प्रस्तुत है। "तमस" में इसका विस्तृत चित्रण मिलता है। लेकिन प्रसंगानुकूल मानवतावाद की झलक इसमें भी मिलती है।

हरनामसिंह और बन्तो अपने ही गांव में मुसलमानों से ड़र बेघर हो जाते हैं तो एक अनजान मुसलमान औरत ही उन्हें अपने घर में पनाह देती है। भीष्मजीने "तमस" में कहा है - "क्षणभर के लिए वह औरत ठिठकी, खड़ी रही, वह निर्णायक क्षण जब मनुष्य अपने समस्त संस्कारों, विचारों, मान्यताओं के पुंजीभूत प्रभाव के आधारपर कोई निर्णय लेता है। औरत कुछ देर तक देखती रही। फिर उसने दरवाजा खोल दिया।"[14] यहाँ भीष्मजी ने यह स्पष्ट किया है कि मानवता एकदम मरती नहीं है, वह कई जगहोंपर जिंदा भी होती है। जिसका किरण "राजो" के रूपमें दिखाई देता है।

राजो का बेटा रमज़ान हरनामसिंहपर "जब कुल्हाड़ी उठाने की कोशिश की, पर कुल्हाडी हाथ में रहते उठा नहीं पाया। काफिर को मारना और बात है, अपने घर के अन्दर जान-पहचान के पनाहगज़ीन को मारना दूसरी बात। उसका खून करना पहाड की चोटी पार करने से भी जादा कठिन हो रहा था। मज़हबी जनून और नफरत के इस माहौल में एक पतली सी लकीर कहीं पर अभी भी खिंची थी जिसे पार करना बहुत मुश्किल था। उसे रमज़ान भी पार नहीं कर पा रहा था।"[15]

तो ऐसी मानवता की मांग "तमस" करता है। जिसमें विशाल दृष्टि हो। उसी समय समाज में मानव गौण समझा जाता था तो धर्म प्रमुख समझा जाता था। समाज में धार्मिक मूल्यों की प्रधानता थी। लेकिन आज मानव को प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। यह मानवीय चेतना व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण होनी चाहिए। जिसमें किसी प्रकार के सिध्दान्त एवं मताग्रह नहीं होने चाहिए। केवल मानव सत्य एवं मानव मूल्यों को महत्व होना चाहिए। तभी परस्पर मतभेद, राग, द्वेष की व्यक्ति त्याग सकता है।

3.4 इस्लाम धर्म "तमस" :-

इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है - शांति में प्रवेश करना।

मुस्लिम वह व्यक्ति है जो परमात्मा और मनुष्य के साथ पूर्ण शांति का संबंध रखता हो।" इस्लाम का लाक्षणिक अर्थ है - वह धर्म जिसके द्वारा मनुष्य भगवान की शरण लेता है तथा मनुष्यों के प्रति अहिंसा एवं प्रेम का बर्तावा करता है। इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद साहब थे। इनका जन्म मक्का शहर में सन 570 ई. में हुआ था। इन्होंने इस्लाम धर्म का प्रचार किया। इस धर्म का उन्हें इलहाम (समाधि अथवा प्रेरणा की अवस्था में) हुआ था। इस धर्म के कुरान, सुन्ना और हदीस तत्व हैं।

1) कुरान में इश्वर के व्दारा भेजे गये संदेश संकलित है।

2) सुन्नत - में मोहम्मद साहब के कृत्योंका उल्लेख है।

3) हदीस में मोहम्मद साहब के उपदेश संकलित हैं। उनकी जीवन चर्या का भी उल्लेख है।

इस धर्म की प्रतिष्ठा के बाद लोग उन्हे पैगम्बर, नबी और रसूल कहने लगे। पैगम्बर याने पैगाम ले जाने वाले। (उनके जरिए भगवान का संदेश पृथ्वीपर पहुँचा)

"नबी" याने - परम ज्ञानी

"रसूल" याने - प्रेषित

"ला इलाह इल्लिलाह मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह" यह इस्लाम का मूलमंत्र है जिसका अर्थ है - अल्लाह के सिवा और कोई पूजनीय नहीं है तथा मोहम्मद उसके रसूल है।" मुसलमानोंके लिए पाँच धार्मिक कृत्य निर्धारित किए है -

1) कलमा पढना - इस्लाम का एकेश्वरवाद (तौहीद) इसी मंत्रपर आधारित है। "ला-इलाह इल्लिलाह मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह" इस मंत्र का पारायण करना।

2) नमाज पढना - अर्थात प्रतिदिन पांचबार अल्लाह से प्रार्थना करना इसको सलात भी कहते हैं।

3) रोजा रखना - रमजान महिने भर केवल शामके वक्त सूर्यास्त के बाद खाना।

4) जकात - अपनी वार्षिक आय का चालीसवाँ हिस्सा (ढाई प्रतिशत) दान देना।

5) हज - तीर्थ यात्रा जाना।

'तमस' में नत्थू सुअर को मार देने के बाद घर लौट रहा था उसे इकतारा बजाने और फकीर के गाने की आवाज आई रमजान के दिनोंमें मुसलमान लोग सवेरे उठकर अपना रोजा खोलते थे। इसी शहर में जो मुसलमान लोग रहते थे वे अपने धर्मोंके नियमों का अनुसरण करते थे।

'तमस' में भीष्मजीने पीर साहिब का वर्णन किया है। कुरान के भी संकेत है। "कुरान शरीफ में फर्माया है कि इनसान की खेतियाँ मेरे हुक्म से खड़ी है। इनसान के सब इरादे मेरे हुक्म पर खडे हैं। मेरा हुक्म नहीं होगा तो लहलहाती खेतियाँ झुलस जायेंगी, मेरे हुक्मपर बाढ़ आयेगी शहरों के शहर तबाह हो जायेंगी। सभी कुछ मालिक के हाथ में है इनसान के हाथ में कुछ भी नहीं। सब काम पाक परवरदिगार के हुक्म से होते हैं। उसका जो हुक्म होगा वही होगा।"[16]

पीर साहब का वर्णन है -

"एक कद्दावर, दाढीवाला व्यक्ति नमूदार हुआ। लम्बा काला कुर्ता, गले में बड़े-बड़े

मनकोंवाले तीन-चार हार, पगडी के पीछे गर्दन पर गिरते हुए लम्बे बाल, हाथ में तसबीह। चौड़े-गोरे चेहरे से नूर बरस रहा था।[17] इनके बारे में लोगों की राय थी कि पीर बहुत पहुँचे हुए है। दिल की बात बुझ लेते है। एक व्यक्ति ने सुनाया कि जब वह जयारत करने गोलडा शरीफ गया तो उन्होंने गेहूँ के दाने उगने के लिए कहाँ। उसने मुठ्ठीभर दाने उठाये तो पीरबाबा ने पहचान लिया कि सिर्फ एक सौ सत्तर दाने ही क्यों उठाए। जादा ले। गिनकर उसने देखा कि मुठ्ठी में एक सौ सत्तर दाने थे।

"पीरों-दस्तगिरों के हाथ में शफा होती है। इश्वर मसियाड़ी के पास बाबा रोड़ा बैठता है, उसके हाथ में भी बडी शफा है।"

"पीर - फकीर की बद-दुआ लग जाय तो शहरों के शहर तबाह हो जाते है।"

"पीर साहब काफिरों को हाथ नही लगाते, काफिरों से नफरत करते है।[18]

इकबालसिंह को इकबाल अहमद बनवा देने के लिए इन लोगों ने उसे कितने कष्ट, यातनाएँ दी। इसका भी चिमण है।

"बोल सरदार, इसलाम कबूल करेगा या नही ? अगर मंजूर है तो अपने आप बाहर आ जा हम तुम्हें कुछ नही कहेंगे। वरना ढेले मार-मारकर मार डालेंगे।[19]

जबर दस्ती से मुसलमानों ने इकबालसिंह से कलमा पढ़वाया

"ला इलाह इल्लि

मुहम्मद रसूल अल्ला"

इकबालसिंह इकबाल अहमद बना। उसकी सुन्नत भी की। उसके लम्बे लम्बे बाल घोडे के बाल काटनेवाली मशीन से काटे। उसकी दाढी की काट मुसलमानी की। न्हाने के बाद असे नये कपडे पहनने के लिए दिए। उसके मुँह में माँस का बड़ा टुकडा (जिसमें से टप टप खून की बुँद टपकर ही थी) ठूस दिया।

एक मुसलमान अपने से कहरहा था कि उन्होंने मारकाट, लूट, दंगों के समय क्या क्या किया। हिन्दू लडकी के साथ उन्होंने जो कुछ किया वह बहुत ही अमानवीय था। उसमें नराधम वृत्ति का ही परिचय मिलता है। उन्होंने लड़की से नही तो अपने धर्म के साथ ही बलात्कार किया है। धर्म की ही इज्जत लूट ली है। अपने धर्म को मृत्यूवत बनाया

"हिन्दुओं की एक लडकी अपने घर की छत पर चढ़ गयी। हमने देख लिया जी। सीधे दस-बारह आदमी उसके पीछे छतपर पहुँच गये। वह छत की मुँडेर लाँघकर इसरे घरकी छतपर जा रही थी जब हमने उसे पकड लिया। नबी, लालू, मीर, मुर्तजा बारी बारी से सभी ने उसे दबोचा।

"ईमान से ?" एक ने संशय से पूछा

"कसम अल्लाह पाक की। जब मेरी बारी आयी तो नीचे से हूँ न हाँ, वह दिले ही नहीं, मैंने देखा तो लड़की मरी हुई।" और वह खोखलीसी हँसी हँसकर बोला, "मैं लाश से ही जना किए जा रहा था।"

"ईमान से ?" उसके साथी ने हुंकारा-सा भरते हुए कहा।

"कसम कुरान शरीफ की, मैं ठीक कहता हूँ।"[20]

3.5 सिख धर्म "तमस"

सिख धर्म के संस्थापक गुरू नानक है। गुरू नानक निराकारावादी थे। वे अवतार वाद, जात-पात और मूर्तिपूजा को नहीं मानते थे। उनकी वेश-भूषा और रहन-सहन सूफियों जैसी थी। उनपर मुस्लिम प्रभाव था। उनका खालसा धर्म (शुध्द धर्म) हिन्दू और मुस्लिम दोंनो भिन्न है।

"सिख धर्म में "वाह गुरू" का जो धार्मिक नारा प्रचलित हैं उसकी एक व्याख्या डोरोथी फील्ड ने की है, - जिसके अनुसार "वा" का संकेत वासुदेव, "ह" का संकेत हरि, "गु" गोविंद और "रा" का राम की ओर है।"[21]

सिख धर्म में गुरू नानक से लेकर गुरू गोविन्दसिंह तक दस गुरू हुए। सिक्खों का मुख्य धर्म-ग्रंथ "ग्रंथ-साहिब" का संकलन सन 1604 ई.में पाँचवे गुरू अर्जुन देव ने किया।

सिक्ख संप्रदाय

सिक्ख संप्रदाय शांत, विनम्र एवं भावुक भक्तों का था। इनका ईश्वर निराकार रूप है। वह सर्वात्म भाव से अणु-अणु के भीतर ओत-प्रोत है। वे कर्म को मानते है। पुनर्जन्म निर्वाण, माया, ब्रहम, विष्णु, महेश को मानते हैं। वे सूफियों की तरह वैराग्य में आस्था रखते है। नामजप, ध्यान, समाधि को भी महत्व देते हैं। उनका पंथ सरल, सुकुमार एवं विनयपूर्व था।

उनका यह धर्म प्रगतिशील धर्म है। सती प्रथा, शराब, तबांखू तथा पर्दाप्रथा का धिक्कार करते है। यह धर्म व्यावहारिक धर्म है।

गुरू गोविंद का अवतार

नानक से लेकर गुरू गोविंद तक इस धर्म के दस गुरू हुए। प्रत्येक गुरू अंत समय में, अपने उत्तराधिकारी को अपना पद सौंपकर उसे धर्मगुरू घोषित कर देते थे। लकिन गुरू गोविंदसिंह ने ग्रंथ को ही गुरू घोषित किया और आज्ञा दी कि अबसे कोई व्यक्ति गुरू नहीं होगा।

गोविंदसिंह विव्दान थे और कवि भी थे। उन्होंने गोविंद रामायण, विचित्र-नाटक, जफरनामा, सौ साखी, जाप, चंडी चरित्र आदि ग्रंथों की रचना की।

गुरू हरगोविंदने अपने पिता की अकाल-मृत्यू से क्षुब्ध होकर सिख संप्रदाय को सैनिक रूप देना आरंभ किया। शांति-प्रिय सिक्ख धर्म में सामरिकता आ गयी। सिक्ख धर्म की सारी मानसिकता को बदलने के उद्देश्य से उन्होंने विशेष प्रयत्न किये।

खालसा धर्म

"आनंदपुर के एक वैशाखी मेले मे, उन्होंने सिक्खों को एकत्र किया। एक बडे चबुतरें पर चारों ओर से कनात खड़ी करवायी और उसके भीतर कुछ बकरे बंधवा दिये। तब वे तलवार खिंचकर कनात से बाहर आये और बोले कि धर्म की रक्षा के लिए चंडी बलिदान चाहती है। तुम में सें जो प्राण देने को तैयार हो, वह कनात में आवे मैं अपने हाथों महाचंडी के आगे उसका बलिदान करूँगा। गुरू की ललकार पर एक आदमी कनात में जाता, गुरू उसे वही बिठा देते और एक बकरें की गरदन काटकर रक्तभरी तलवार लिए बाहर निकल आते। इस प्रकार पाँच वीर कनात के भीतर पहुँचे। जब छटाँ आदमी नहीं उठा तब गुरू ने अन पाँच वीरों को बाहर निकाला और कहा कि "ये पाँच (लाहौर के दयाराम, दिल्ली के धर्म दास, व्दारका के मुहकमचन्द, बीदर के साहिबचंद और जगन्नाथपुरी के हिम्मत) प्यारें धर्म के खलिस अर्थात शुध्द सेवक हैं। और उन्हें लेकर मैं आजसे खालसा धर्म की नीव डालता हूँ। उसी समय उन्होंने एक कडाह में पवित्र जल भरवाय, उनकी धर्म पत्नी ने उसमें कुछ बताशें घोले और गुरू ने तलवार से उस जल को आलोड़ित किया और वह जल तलवार से उनपर छिड़का। और खालसा धर्म की सेवा में प्रयुक्त हुए।"[22]

गुरू गोविंदसिंह ने पगड़ी बाँधने की प्रथा चलाई, पंच ककारों के धारण को अनिवार्य समझा - पंच ककार इस प्रकार है -

1) कंघी - बाल साफ करने के लिए

2) कच्छा - फुर्ती के लिए

3) कड़ा - (यम, नियम और संयम का प्रतीक)

4) कृपाण - (आत्मरक्षा के लिए)

5) केश - (जो सभी सिक्ख गुरू धारण करते हैं।

जिन कर्मोंका निषेध सिक्ख धर्म में किया जाता है उनका उल्लेख रहतनामा में मिलता है। इसमें केश-कर्तन को महान अपराध समझतें हैं। गुरूओं ने सिक्खों के हृदय में वीरता और बलिदान की भावना जगा दी जिसकी अवश्यकता उन्ही दिनों थी।

गुरू गोविंद की धर्म परंपरा के अनुसार सिक्ख धर्म के दो रूप हुए -

1) वीर सिपाहीवाला

2) संत और भक्तवाला

सिख धर्म में संत गुरू को गौण स्थान दिया जाता है। और वीर शिपाहि यों को प्रमुख स्थान दिया जाता है। आज भी हम सिक्खों और सैनिकोंकी वीरता अपनी फौज् में देखते हैं।

कहा जाता है कि गुरू गोविंदजी परशुराम के अवतार थे। और संकट के समय मनुष्य को अपनी रक्षा किस प्रकार करनी चाहिए ये सिखाने आये थे। जीवन में शास्त्र जितना उपयोगी है उतना शस्त्र भी है। आत्म रक्षा एवं शत्रू का संहार करने के लिए उसकी आवश्यकता होती है।

धर्मयुध्द की आवश्यकता

प्राचीन काल से भारत वर्ष में धर्मयुध्द की आवश्यकता स्वीकृत है। केवल सनातन मार्ग से धर्म रक्षा नहीं होती उसके लिए शस्त्र (तलवार) धारण करना आवश्यक है। सिक्ख संप्रदाय में भी इसे स्वीकार कर वीरता और बलिदान को विशेष महत्व दिया है। सिक्खों के पांचवे गुरू अर्जुनदेव के साथ जहांगीर ने जो अत्याचार किया था तभी सिक्खोंको पहली बार अहसास हुआ कि जप-माला से धर्म बच नहीं सकता उसके लिए तलवार की आवश्यकता है। और इसका दायित्व तत्कालीन शासकों की धर्मान्ध नीति पर ही है।

"जहांगीर ने अपने भाई खुसरो को मारने के लिए योजना बनाई तब वह अपने प्राण बचाने के लिए भागा। और उसने गुरू अर्जुनदेव से आर्थिक सहायता की मांग की। गुरू ने भी उसे 5 हजार रूपये दिए। यह बात जहांगीर को मालूम हुयी। "जहांगीर ने उन्हें दिल्ली बुलवाया, उन पर दो लाख रूपयों का जुर्माना ठोक दिया, और यह भी आज्ञा दी की ग्रंथ साहिब में से वे सभी पंक्तियों निकाल दो जिनसे इस्लाम का थोड़ा भी विरोध होता है। किन्तु अर्जुनदेव ने दोनों आज्ञाओं के मानने से इन्कार कर दिया। इसपर जहांगीर ने गुरू पर भयंकर अत्याचार किए। उनके उपर जलती हुयी रेत डाली, उन्हें जलती हुयी लाल कड़ाही में बिठाया और उन्हें उबलते हुए गर्म जल से नहलाया। गुरू ने सब सहन किया। सिक्खों के प्रसंग में सुविख्यात जहाँगिरी-न्याय का उदाहरण संसार के सामने आया।"[23] और इसी से सिक्ख-मुसलमान भेदभाव प्रारंभ हुआ।

सिक्ख-मुसलमानों का शत्रुत्व

जहांगीर ने जो अत्याचार अर्जुनदेव गुरू के साथ किए उसी के कारण सिक्ख-मुसलमानों में शत्रुत्व पैदा हुआ। सिक्खों को मुसलमान बनवाने की कोशिश की। सिक्खों का संगठन भी बहुत जोरदार था। गुरू हरगोविंद के समय सिक्खों से मोगल तीन लड़ाइयों में भिड़े।

"पहली लड़ाई सन् 1628 ई. में, दूसरी सन 1630 ई. में और तिसरी सन 1634 ई. में हुयी। सन् 1634 ई. वाली लड़ाई काफी भयानक थी। उसमें मोगलों ने कोई पचहत्तर हजार की सेना लेकर गुरू हरगोविंदपर चढ़ाई की। किन्तु तीनों लड़ाईयों में जीत सिक्खों की हुयी।"[24]

इसके बाद सिक्खों की प्रतिष्ठा बढ़ी। हिन्दू समाज भी उन्हें रक्षक के रूपमें देखने लगा। अपनी धर्म रक्षा के लिए हरगोविंद ने सेली फाड़कर गुरूद्वारे में डाली और शरीर पर राजा और योध्दा का परिधान धारण कर लिया। और उन्होंने आज्ञादी कि अब ये भक्त गुरू-द्वारे में चढ़ाने के लिए द्रव्य नहीं तो शस्त्रास्त्र भेंज दें।

औरंगजेब की धर्म परिवर्तन नीति का सिक्खों ने विरोध किया। इसमें तेगबहादूर का बलिदान भी हुआ। औरंगजेबने तेग बहादूर को इस्लाम कबूल करने के लिए बहुत सी यातनाएँ दी। उन्हें पिंजड़े में बंद कर उनपर भयानक अत्याचार किये और उनकी हत्या की। पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए हरगोविंदने प्रारंभ किया। सिक्ख धर्म इस्लाम के विरूध्द हुआ। इस्लामी हमलों से बचने के लिए अनेक सिक्खों ने अपना बलिदान किया। उन्होंने अपने धर्म को सुगठित बना दिया। और वीरता के साथ मुगलोंसे टक्कर दी। जिससे हिन्दू-धर्म जीवित रहा।

सिक्ख संगत/गुरूद्वारा :-

सिक्ख धर्म में संगत या संगठन की जो प्रथा थी। उससे मुसलमान लोग ड़रते थे। सिख धर्म के प्रवर्तक गुरू नानक स्वयं को न हिन्दू मानते थे, न मुसलमान। उनकी दृष्टि से सिख सुधरा हुआ हिन्दू एवं मुसलमान है।

"तमस" उपन्यास में इस सिक्ख धर्म का परिचय भीष्मजी ने संकेतात्मक एवं प्रतीकात्मक रूप में दिया है। सांप्रदायिक दंगे के बाद "गुरूद्वारा खचाखच भरा था। संगत मस्ती में झूम रही थी। बस अनमोल समय था। रागी पूरी तन्मयता से आँखें बन्द किये गा रहे थे - "तुम बिन कौन मेरे गोसाई।" यह कुर्बानी की आवाज शताब्दियों के फासले लांघकर फिर से गुंज रही थी। तीन सौ साल पहले भी ऐसा ही गीत दुश्मन से लोहा लेने से पहले गाया जाता था। आत्मबलिदान की भावना से ओत-प्रोत वे सब-कुछ भूले हुए थे। इस विलक्षण क्षण में उनकी आत्मा अपने पुरखों की आत्मा से जा मिली थी। वे फिर से अतीत में जा पहुंचे थे। तुर्कों के साथ लोहा लेना का फिर से समय आ गया था।"[25]

आज तुर्कोंकी ओर से सिक्खोंपर हमला हो रहा था। इस कारण सभी सिक्ख अपने गुरूद्वारे में इकट्ठे हुए थे। गुरूद्वारा का चित्रात्मक वर्णन भी इसमें है। दीवारों पर, ऊपर लाल, हरे और पीले रंग के शीशे लगे थे। लकड़ी के चार खम्भों के बीच गुरू ग्रंथ साहब की चौकी थी। और चौकी के ईर्द गिर्द पीतल का कटहरा बना था। चौकी को लाल रंग के रेशमी कपड़े से ढ़क दिया गया था। इसमें स्त्रियाँ

और पुरूष बैठे थे। सब की आँखें चमक रही थी जिसमें कुर्बानी के भाव थे। स्त्रियों के कमर से कटारें लटक रही थी। और अपने इतिहास को दोहराने के लिए सभी तैयार थे।

गुरूद्वारे में असला इकट्ठा किया था। सुरक्षा का कड़ा बंदोबस्त किया था। गुरूद्वारे के छतपर सिक्ख नौजवान बंदुक लेकर पहारा दे रहे थे। उनकी वेशभूषा भी वैसी ही थी, जैसे नीला बाना, नीली पगड़ी और पगड़ी के ऊपर लोहे का चक्र और पीला कमरबन्द पहनें हुए थे। पुराने जमाने में खालसा भी पीला बाना पहनकर रणभूमि में उतरता था। इसी वातावरण में हर किसी की कोशिश थी कि जहाँ तक हो सके अपनी पोशाक में भी उस अखण्ड परंपरा का कोई न कोई चिन्ह आ सके जिनसे वे अपने अतीत के साथ और गहरे में जुड़ सकें।

बदले की आग में सभी सिक्ख भड़क उठें थे। आज उनका शत्रू केवल मुसलमान था। "सभी के चेतना में वे सभी बातें थी जो दूर अतीत में हुआ करती थी, बलीदान की भावना, मुसलमान शत्रु, ढ़ाल, तलवार, गुरू का प्रसाद, अखण्ड एकता - जो नहीं था तो उनकी चेतना में अंग्रेज नहीं था। अस्तित्व था तो तुर्क का, या खालसा का, उसके बढ़ते आ रहे लश्करों का, आत्म बलिदान की बेला में उस महायज्ञ का जिसमें सभी अपने प्राणों की आहुति डालने के लिए तैयार थे।" जो बोले सो निहाल। "सत् सिरी अकाSSSल" जैसे नारे गुंज रहें थे। अपने पुरखों की भाँति आत्मबलिदान के लिए तैयार - सिक्खों को लग रहा था कि आज उनके इम्तहान का वक्त आ गया है। खालसा पंथ को गुरू के सिंहों के खुन की, बलिदान की आवश्यकता है। गुरू महाराज कुरबानी मांग रहे है। कुरबानी की भावना से सभी प्रेरित हो उठे थे। गुरूवाणी अरदास का पठन कर रहे थे। और सभी एक आवाज में बोल उठें -

"राज करेगा खालसा, बाकी रहे न कोय ---।"[26]

यह सांप्रदायिकता की आग आज तो अंग्रेजों ने लगा दी थी। इसमें मुसलमान हिन्दुओं का कोई दोष नहीं था। गुरूद्वारे में एक दुबला-पतला युवक बता रहा था - "हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम लोगों को मुसलमानों के खिलाफ भड़काया जा रहा है। और मुसलमानों को हमारे खिलाफ भड़काया जा रहा है। हम झूठी अफवाहें सुन-सुनकर एक-दूसरे के खिलाफ तैश में आ रहे हैं। हमें अपनी तरफ से पूरी कोशिश करनी चाहिए कि गांव के मुसलमानों के साथ मेल-जोल बनाये रखें। और हत्तुलवसा कोशिश करें कि गाँव में फिसाद न हो।"[27]

3.6 ईसाई धर्म और "तमस" :-

"संसार के धर्मों में तीन धर्म बहुत प्राचीन है। (1) हिन्दू धर्म (2) जरथुस्त्र (3) यहुदी। पहले दो आर्योंके बीच उत्पन्न हुए और तीसरा धर्म सामी जाति के बिच जनमा। जिस प्रकार हिन्दू धर्म से बौध्दधर्म की उत्पत्ति हुई, उसी तरह यहुदी धर्म से ईसाई धर्म उत्पन्न हुआ। ईसाई धर्म पुरानी बाइबिल

में प्रतिपादित यहुदी धर्म का सुधरा हुआ रूप है। ईसाइयत और इस्लाम दोनों का संबंध है। क्योंकि ईसाई धर्म प्रवर्तक "ईसा" और मुसलमान धर्म प्रवर्तक "पैगबर" (मोहम्मद) सामी जाति के थे। हजरत इब्राहीम के खानदान में ये दोनों हुए है। यह सामी जाति मूर्तिपूजक थी। हजरत इब्राहिम ने इसका विरोध किया। और एकवाद को स्वीकार किया।

ईसाई धर्म का महान ग्रंथ "बाईबल" है। यह दो प्रकार की है। पुरानी बाईबल और नई बाईबल। पुरानी बाईबल का कुछ भाग हजरत दाऊद (Douid) और कुछ भाग मूसा (Moses) का लिखा हुआ है। हजरत ईसाने नयी बाईबिल लिखी इसके साथ वेद, उपनिषद और बौध्द धर्म के तत्वों में साम्य है। यहुदी पुरानी बाईबिल में और ईसाई लोग नयी बाईबिल में विश्वास रखते है।

दाऊद, मूसा और ईसा तीनों पैगम्बर थे। हजरत मूसा को करीम-उल्लाह (प्रभु से बातें करनेवाला), हजरत ईसा को रूह-उल्लाह (प्रभु की आत्मा) और हजरत मोहम्मद को रसूल उल्लाह (प्रभु का दूत) कहते हैं। इसाई लोग जीवों पर दया, सब के साथ मैत्री, करूणा से व्यवहार करते हैं। इसाई धर्मपर बौध्द धर्म का प्रभाव दिखाई देता है। ईसा और बुध्द के व्यक्तित्व तथा उपदेशों में समानता है। प्रारंभ में ईसाई धर्म में त्याग, संन्यास और साधना को भी महत्व दिया जाता था। "संस्कृति के चार अध्याय" इस किताब में उपर्युक्त जानकारी मिलती है।

ईसाई धर्म और हिन्दुत्व :-

भारत में सन् 1500 ई से ईसाई धर्म का प्रचार होता आया है। धर्म प्रचारार्थ उन्होंने यहाँ अपने पैर फैलाये और शासक बने। उन्होंने धर्म परिवर्तनपर जोर दिया। जिसमें हिन्दुत्व के अंदर छोटी जातियों में बड़ी संख्या में धर्म परिवर्तन हुआ। धर्म प्रचारकों पर कुछ प्रतिबंध थे। सन 1813 ई में इन बंधनों को उठा दिया। भारत में मिशनरियों ने स्कूल तथा कॉलेज भी खोले। और शिक्षा के माध्यम से ईसाई धर्म प्रचार बढ़ने लगा।

अंग्रेजनीति :- ईसाई इस देश को यूरोप बनाना चाहते थे। इस देश में नवजागरण का युग आया और इसमें हिन्दू-मुसलमानों ने आवाज उठायी। तो अंग्रेज मुसलमानों को राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग रखना चाहते थे। इन दोनों में 'फूट ड़ालो और राज करो" ऐसी उनकी नीति थी। "तमस" में करीमखान कहता है -

"अंग्रेज हाकिम की आँख चारों तरफ देखती है वरना क्या यह मुमकिन है कि मुठ्ठीभर फिरंगी सात समंदर पार से आकर इतने बडे मुल्क पर हुकूमत करें? अंग्रेज बहुत दानिशमन्द हैं, दूर अन्देश है।"[28]

अंग्रेजों की नीति से ही भारत विभाजन हुआ। 'तमस' में अंग्रेज डिप्टीकमीश्नर रिचर्ड की बातों से उसकी नीति का परिचय मिलता है।

"हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौनसी समानता पायी जाती है। उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों में एक-दूसरे से अलग हैं?"[29] इसी अलगता को दानिशमन्द अंग्रेजोंने पहचान लिया था और हिन्दू-मुसलमानों में फूट डलवायी थी। जरनैल कहता भी है जिला काँग्रेस कमेटी का जो आम पब्लिक जलसा होगा जिसमें हिन्दुस्थान की आजादी की जद्दोजहद में अंग्रेजी सरकार की फूट नीति का पर्दाफाश किया जायेगा। यह सब अंग्रेजों की शरारत थी।

'तसम' में दंगों की जो भयानकता चित्रित की है उसमें 103 गांव जलकर भस्म हुए थे। अंग्रेज अफसर रिचर्ड अपनी पत्नी को कह रहा था कि"यह देश मेरा नहीं है और न ही ये लोग मेरे देश के हैं।" इसी कारण वह तटस्थता की भूमिका ले रहा था। "सिविल सर्विस हमें तटस्थ बना देती है। हम यदि हर घटना के प्रति भावुक होने लगें तो प्रशासन एक दिन भी नहीं चल पायेगा।"[30]

इस तरह अंग्रेजों ने बड़ी चतुराई से धर्म के नाम पर हिन्दू-मुसलमानों को भड़का दिया था। रिचर्ड की पत्नी लीजा कहती भी है कि "मैं सब जानती हूँ देश के नामपर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नामपर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो।"[31] इस प्रकार अंग्रेजों को तो दंगा कराना ही था। और धर्म के नामपर हिन्दू-मुसलमानों में भीषण सांप्रदायिक दंगा कराकर और भीषण नर संहार हो जानेपर वह कुटनीति की चाल चलता है। हवाई जहाज उड़ाकर शान्ति की घोषणा करता है। अमन कमेटी की स्थापना की जाती है। हानी की पूछताछ होती है। अंग्रेज नीति के अनुसार अमन कमेटी में फिर संघर्ष होता है। मुसलमान काँग्रेस को हिन्दुओं की संस्था घोषित कर पाकिस्तान की माँग करते हैं। जिससे भारत दो टुकड़ो में बाँटा गया।

3.7 हिन्दुओं की कमजोरी और "तमस" :-

"मुसलमानी आक्रमण के बाद भारत वर्ष पहले पहल पराधीन हुआ। और पहले पहल इस देशपर ऐसे लोगों का आधिपत्य हो गया जो यहाँ के धर्म से अपने धर्म को एकाकार करना नहीं चाहते थे। बल्कि जिनकी कोशिश थी कि भारतीय जनता अपना धर्म छोड़कर मुसलमान हो जाय। सिंधपर मुसलमानों का अधिकार सन् 712 ई. में हुआ। मुहम्मद गोरी ने दिल्ली को सन 1192 ई. में जीता। इस प्रकार हिन्दुओं को और नहीं तो चार-पाँच सौ साल की चेतावनी तो मिल ही गयी थी। फिर इस देश ने मुसलमानी आक्रमण से बचने की तैयारी क्यों नहीं की?"[32]

हिन्दुस्थान हिन्दुओं का होते हुए भी इसपर मध्य आक्रेताओं ने राज किया। इनपर अत्याचार किये। राष्ट्रीय संपत्ती का विध्वंस किया तथा लूट की। सबसे ज्यादा अत्याचार मुसलमानों ने किये। जिसके धब्बे आज भी हिन्दुओं के मन में एवं राष्ट्र में परिलक्षित होते हैं। "तमस" उपन्यास में सत्संगत में वानप्रस्थजी कहते हैं -

"फैलाये घोर पाप यहाँ मुसलमीन ने

नेअमत फलक ने छीन ली, दौलत ज़मीन ने।"[33]

इनमें जब चर्चा हो रही है तो एक सदस्य ने कहा -

"यही हम हिन्दुओं में बहुत बड़ी कमजोरी है। हम प्यास लगने पर कुआँ खुदवाते हैं। आज जब हालत बिगड़ रही है और मुसलमान जामा मश्जिद में असला इकट्ठा कर रहे हैं, हम लाठियाँ खरीदनें जा रहे हैं।"[34]

सारे शहर की स्थिति बिघड़ गयी है। हिन्दू-मुसलमानों में तनाव एवं आतंक छा रहा है। मुसलमान लोगोंने पूरी तैयारी की है। और हिन्दू लोगों के नौजवानों को लाठी चलाना सिखाने की सलाह हिन्दू बुजूर्ग दे रहे हैं। और इसके लिए बाजार से लाठियाँ मँगवाना चाहते हैं। भीष्म साहनी यहाँ संकेत देना चाहते है कि हिन्दू कितने बेखबर होते हैं। उन्हें अपनी असूरक्षा का भी ज्ञान नहीं था।

"संस्कृति के चार अध्याय" में दिनकरजी ने हिन्दू हारे क्यों? इसके यथार्थ कारण स्पष्ट किए हैं। "अक्सर कहा जाता है कि हिन्दू इसलिए हारे कि वे गर्म देश में रहते थे और मांस खाना उन्होंने छोड दिया था। इसके विपरित मुसलमान ठंडे देश से आये थे और मांसाहारी होने के कारण उनमें शारीरिक शक्ति भरपूर थी। दूसरा कारण यह बताया जाता है कि युध्द में हिन्दू अपने लस्टम-पस्टन् हाथियों का भरोसा रखते थे जो फुर्तीलें घुड़सवारों के मुकाबिलें में निकम्मे निकलते थे। श्री जयचंद विद्यालंकार ने कहा है - "हिन्दूओं की पराजय इसलिए हुई कि उनका राजनीतिक जीवन मन्द हो गया था।"[35]

"आदमी कमजोर पहले होता है, पराजय उसकी बाद को होती है। देश की एकता पहले टूटती है, दासता उसपर बाद को आती है।"[36] हमें मालूम है, इस देश में अनेक छोटे छोटे राज्य थे। उनका प्रमुख राजा था। और राजा केवल अपने राज्य तक ही सीमित था। वह केवल अपने ही राज्य की चिंता करता, देश की चिंता से उसका क्या ताल्लुक? इस कारण ही हिन्दुओं की हार होती गयी। धर्म एवं सिध्दान्तों में ढ़ीलापन था। उनमें एकता की कमी थी। उनका साहस तथा पुरूषार्थ कमजोर बनता जा रहा था। उनमें धार्मिकता की अधिकता थी, वे ईश्वर पर भरोसा करते थे।

हिन्दू लोग जन्मतः अहिंसक थे। यहाँ के बौध्द, जैन, ब्राहमण लोगों में मांस भक्षण पाप समझा जाता था। भीष्मजी ने भी इसका जिक्र किया है - "बचपन में मुसलमानों के मुहल्ले में रहते हुए भी हमारे मुसलमान मित्र नहीं थे। पड़ोस में गोश्त पकता तो माँ नाक चढ़ाकर कहती "सिरी भून रहे हैं।"[37] लेकिन मुसलमानों के प्रति संशय और अविश्वास होने के कारण हिन्दू उनसे डरते थे।

3.8 कॉंग्रेस की स्थिति और "तमस" :-

कॉंग्रेस की स्थिति दयनीय बन गयी थी। पारस्पारिक दलबन्दी और उससे उत्पन्न अव्यवस्था का चित्रण इसमें मिलता है। मुस्लिमों की धारणा थी कि "कॉंग्रेस हिन्दुओं की जमात है। इसके साथ मुसलमानों का कोई वास्ता नही हैं।"

"कॉंग्रेस सबकी जमात है। हिन्दुओं की, सिक्खों की, मुसलमानों की। आप अच्छी तरह जानते हैं महमूद साहिब, आप भी पहले हमारे साथ ही थे।"[38] कॉंग्रेसपर मुसलमान लोग इस प्रकार आरोप कर मुस्लिम लीग की मांग कर रहें थे।

कॉंग्रेस की खद्दर पोशाक पर भी इसमें व्यंग्य किया गया है। अवसरवादी लोग कॉंग्रेस में घुसकर उँची कुर्सियों पर जम जाने की कोशिश में भी थे। कुछ पुराने, कर्मठ देशभक्त ऐसे लोगों के प्रति निराश भी थे।

सबसे पहले मौलाना आज़ाद कॉंग्रेस के प्रतिनिधि लिडर थे। मौलाना आज़ाद हिन्दुओं का सब से बड़ा कुत्ता है। गांधी के पीछे दुम हिलाता फिरता है।"[39]

कॉंग्रेस विरोधी राजनीतिक दल के रूप में कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रभाव का भी इसमें संकेत दिया है। कॉंग्रेस का एकनिष्ठ सेवक जरनैल कश्मीरीलाल को कहता है - मैं तुम्हारा पर्दाफाश करूँगा। तुम्हारा कम्युनिस्टों के साथ उठना बैठना है। मैं जानता हूँ। देवदत्त कम्युनिस्ट के साथ कुबडे हलवाई की दूकान पर मैंने छाना मुर्गी खाते देखा है।"[40]

हिन्दू सभा का भी इसमें जिक्र है। कॉंग्रेस कमेटी के सदस्य हिन्दू सभावालों के साथ भी ताल्लूक रखते थे। "दो बेड़ियों में टांग रखना अच्छा नही होता। तुम हमेशा यही करते रहे हो। एक टांग कॉंग्रेस में, दूसरी हिन्दू सभा में। तुम समझते हो किसी को मालूम नही, सभी को मालूम है।"[41] कॉंग्रेस में ऐसे दुटप्पी लोग भी थे। जो केवल स्वार्थ देखते थे।

कॉंग्रेस में होनेवाले मुसलमान किस प्रकार की गद्दारी करते थे इसका भी चित्रण इसमें किया है। जिससे कॉंग्रेस की दयनीयता एवं खोखलापन स्पष्ट होता है। मेहता जी कहते है - "लतीफ को कांग्रेस के दप्तर से निकालो। मैं लिखकर दे सकता हूँ कि वह खुफिया पुलिस का आदमी है। और हम सब की रिपोर्ट देता है। डायरियाँ लिखता है। तुम्हें भी मालूम है और मुझे भी। फिर भी तुम आस्तीन का साँप पाल रहें हो। उधर मुबारकअली लीगियों के साथ साँठ-गाँठ कर रहा है। तुम से भी पैसा लेता है, लीग वालों से भी लेता है।"[42] इससे भीष्मजी ने स्पष्ट किया है कि कॉंग्रेस में ऐसे अस्तीन के सांप थे। जिनकी वजह से एकता बन नहीं पा रही थी। आये दिन फ़िसाद हो रहे थे। एक

जाति दूसरी जाति का दुश्मन बन रही थी। अफवाहों के कारण वातावरण भयावह एवं आतंकित बन रहा था।

काँग्रेस के सदस्यों में परस्पर मेल नहीं था। वह हमेशा आपस में झगड़ते थे। शंकर और मेहताजी इसके अच्छे उदाहरण है। मेहताजी ने कहा -

"खांने बैठा है शंकर, तो इन्सानों की तरह खा। हमारी जिला काँग्रेस की रूसवाई करवा रहा है।"

"यह काँग्रेस के पैसे से नहीं खा रहा हूँ, अपने पैसे से खा रहा हूँ।"[43] लाहौर में होनेवाले सम्मेलन में जिला कमेटी की ओर से जो प्रतिनिधि गये थे उनका चन्दा मेहताजी ने काँग्रेस फण्ड में से दिया था। इसमें शंकर का नाम मेहताजी ने लिया नहीं था। तो इसपर शंकरने व्यंग्य किया है।

इसमें काँग्रेस सदस्यता के नियम भी स्पष्ट किये है। "कि सदस्य चार आने सालाना चन्दा देता हो, शुध्द हाथ की कती, हाथ की बुनी खादी पहनता हो, चरखा कातता हो।" प्रदेश काँग्रेस के चुनाव में रेशमी नाड़ा पहनने के वास्ते कोहली साहब का नाम क कर दिया था।

काँग्रेस कमेटियों के द्वारा प्रभात फेरी भी निकाली जाती। तामीरी काम भी किया जाता। नाली साफ करने का विस्तृत ब्यौरा भीष्मजी ने दिया है। नालियाँ साफ करते समय शंकर ने कहा - "यह तामीरी काम बकवास है। नालि साफ करनेसे स्वराज्य नहीं मिलेगा।" इसपर बख्शीजी ने उत्तर दिया "यह हमारी देशभक्ति का चिन्ह है। इस तरह हम गरीबों के स्तर उतर आते हैं। झाडू लेकर या खादी पहनकर जाते हो तो लोग तुम्हें अपना समझतें हैं।"

"जब से यह तामीरी काम करने लगे हो, आन्दोलन ठप्प हो गया है। लगाओ झाडू, और कातो चरखो।" तभी जरनैल ने कहा - "तुम गद्दार हो। मैं तुम्हें जानता हूँ। तुम कम्युनिस्ट हो।"[45]

दंगे, फिसाद, मारकाट, आगजनी के बाद सारा शहर भयंकर बन बैठा तभी सरकार की तरफ से कर्फ्यू लगवाया गया और अमन कमेटी की मांग की। इसमें भी हिन्दू, सिख, मुसलमान झगड़ा फिर उपस्थित हुआ। कम्युनिस्ट देवदत्त का नाम जनरल सेक्रेटरी के लिए लिया गया तो लोगों ने कहा - "मैं पूछता हूँ क्या सरकार के दुमछल्ले कौम के गद्दार कम्युनिस्ट ही इस काम के लिए रह गये हैं? और सब नौजवान मर गये हैं? यह चुनाव ढोंग है।"[46]

भारत विभाजन राष्ट्रीय नेतृत्व की विफलता का परिणाम था यह बात यहाँ स्पष्ट हो जाती है। 'महात्मा गांधी का कहना था कि देश का बंटवारा उनकी लाश पर होगा।' नेहरू विभाजन के विचारों को भारतीय लोगों के साथ सब से बड़ा धोखा मानते थे। लार्ड माउंटबेटन का विचार था कि विभाजन की योजना मूर्खतापूर्ण आत्महत्या की बात है। मौलाना आजाद विभाजन के विचार को सबसे

बड़ा विश्वासघात मानते थे। फिर भी विभाजन हुआ।

मौलाना आजाद का मत है कि "महात्मा गांधी, सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू जो इस काल में कांग्रेस के प्रभावशाली नेता थे, द्वारा की गई गलतियों के कारण कांग्रेस देश के विभाजन को न रोक सकी। उन्हें सबसे अधिक अफसोस पं. नेहरू की गलतियों से है। वे नेहरू को कट्टर धर्म निरपेक्ष आधुनिकतावादी वैज्ञानिक चिंतनशील और अपना सर्वश्रेष्ठ मित्र मानते थे। परंतु उनके अनुसार उत्तेजनात्मक स्वभाव के कारण विभाजन हुआ।"[47]

एम्.जे. अकबर द्वारा लिखित जीवनी में यह स्पष्ट किया है कि पूरा नेहरू परिवार इतना महान है कि वह कभी कोई गलती ही नहीं कर सकता। इसलिए नेहरू को किसी भी रूप से विभाजन के उत्तरदायित्व के साथ जोड़ना बहुत बड़ी गलती है। तो उन्होंने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि भारत विभाजन की जिम्मेदार पूरी तरह से मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना और ब्रिटिश शासकों की है।"[48]

भारत विभाजन के बाद आज 1992 तक इस विभाजन से हम ने कुछ सीखा नहीं है। क्योंकि आज कॉंग्रेस की स्थिति एवं सांप्रदायिक दंगे वैसे ही है जैसे पहले थे।

3.9 हिन्दू-मुसलमान भेदभाव और "तमस" :-

सभी विदेशी आक्राता को हिन्दु लोग म्लेच्छ समझते थे। और कहा जाता है कि हिन्दुओं की दृष्टि से म्लेच्छ वही है जो संस्कृत नहीं जानता। मुसलमानों ने इसका गलत अर्थ लिया। उनके कठोर मानसिक विश्वासों ने हिन्दुओं के साथ शत्रुत्व रखा। उन्होंने भारत देश पर आक्रमण किया और हिन्दुओंपर ऐसे अत्याचार किये जो भूलाने पर भी भूले नहीं जाते।

स्वर्गीय मानवेंद्र राय ने लिखा है कि "संसार की कोई भी सभ्य जाति इस्लाम के इतिहास से उतनी अपरिचित नहीं है जितने हिन्दू हैं। और संसार की कोई भी जाति इस्लाम को उतनी घृणा से भी नहीं देखती, जितनी घृणा से हिन्दू देखते हैं।"[49] हिन्दुओं का यह दृष्टिकोण गैर नहीं है। क्योंकि इतिहास इसका गवाह है। भारतपर मुसलमानों ने इतना भयानक अत्याचार किया है कि सारे संसार में किसी ने भी इतना अत्याचार नहीं किया। परिणाम स्वरूप इन दो जातियों के दिल साफ नहीं है।

प्रतिशोध की भावना :-

हिन्दू जन्मतः अहिंसक थे। इस भारत भूमिपर अनेक परजातियों ने आक्रमण किया तथा यहाँ आश्रय ग्रहण किया। इस कारण अनेक संस्कृतियों का समन्वय इस धरतीपर देखा जाता है। लेकिन भारत पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ जो मित्रता के नाते था। उनमें व्यापार भी चलता था। उत्तर

प्रदेश के राजा उन्हें उदारता से देखते थे। प्रथमावस्था में हिन्दू-मुस्लिम संबंध मैत्रीपूर्ण रहा।

हिन्दुओं के मनमें इस्लाम से घृणा की भावना महमूद गजनी की क्रूरता से युक्त आक्रमण से आरंभ हुयी। हिन्दुओं के मंदिरों का विध्वंस कर उनकी धार्मिक भावनाओं की अवहेलना की और घृणा के बीज बोये। मुसलमानों के आक्रमण से भारत पहले पहल पराधीन हुआ। मुसलमानों ने यहाँ के हिन्दूओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाने पर विवश किया। उनकी कोशिश यह थी कि भारतीय जनता ने अपना धर्म त्याग मुसलमान बनें। परिणाम स्वरूप हिन्दुओं का अहंकार बढ़ता गया। उनकी सहिष्णुता वृत्ति विद्रोही बनी। और भारत की असांप्रदायिक परंपरा टूट गयी। और सांप्रदायिकता का जन्म हुआ। एक ही नस्ल के लोग एक दूसरें के दुश्मन बनें। इस तरह मुसलमानों ने अपने क्रूर अत्याचारों से हिन्दुओं के मन में सांप्रदायिकता की आग पैदा कर दी। धार्मिक द्वेष एवं सांप्रदायिकता मुसलमानों की देन हैं। कबीर ने ठीक ही कहा है -

"हिन्दु कहत है, राम हमारा, मुसलमान रहमाना,
आपस में दोउ लड़े मरत हैं, भेद न कोई जाना।"

अंग्रेजों का आगमन :-

भारत में अंग्रेजों के आगमन के साथ उनकी विचारधारा, परंपरा, संस्कार, शासन व्यवस्था से हिन्दू मुस्लिम दोनों जातियाँ प्रभावित हुई। अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा से लोगों में नवजागरण होने लगा। जिससे राष्ट्रीय भावना ने जन्म लिया। मुसलमानों को अंग्रेजों के प्रति घृणा थी। क्योंकि भारत का शासन मुसलमानों के हाथ से उन्होंने ही छीना था। अंग्रेजों को भी इस बात का एहसास हुआ कि मुस्लिम जनता उनकी विरोधी जाति है। मुसलमान लोग अंग्रेज सरकार की वक्र दृष्टि के शिकार बने।

लेकिन मुसलमानों ने अपनी कमियों को जान लिया। उन्होंने तय किया कि अंग्रेजी पढ़कर अंग्रेजों के यहाँ नौकरी प्राप्त करें। राष्ट्रीय आन्दोलन की जो भावना पनप रही थी उसे त्याग अंग्रेजों के प्रति राजभक्ति का सबूत दें। और अपना कल्याण एवं हित देखें। मुसलमानों को राष्ट्रीय आन्दोलन से दूर रखने का प्रयास अंग्रेजों ने भी किया।

बम्बई के गवर्नर ने भी कहा था कि "रोमनों की नीति "बाँटो और राज करो" की नीति थी। वह हमें भी बरतनी है।"[50] भारत में हिन्दू एवं मुसलमान अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगे।

सन 1905 में लार्ड कर्जन ने बंगाल का, सांप्रदायिकता के आधारपर विभाजन कर दिया। यह अंग्रेजों की चाल थी। इसमें मुस्लिमोंने हिन्दुओं की मदद नही की।

सन 1906 में वायसराय ने कुछ मुसलमानों को "मुस्लिम लीग" नामक संस्था स्थापित करने की अनुमति दी।"[51] अंग्रेजों ने भारत में राष्ट्रीय भावना को कमजोर करने के लिए सांप्रदायिक भावना का पोषण किया। हिन्दू-मुसलमान आपस में बैर रखने लगे। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की माँग होने लगी।

राष्ट्रीय आन्दोलन :- "तमस" में भीष्म साहनी ने इस विभाजन के मूल कारणों को ढुंढेने की कोशिश की है। भारत - पाकिस्तान विभाजन के पूर्व जगह-जगह भयानक दंगे हो रेहे थे। इनमें इतनी भीषण हत्याएँ हुयी जिससे समाज क्षत-विक्षत बन गया। इन दंगों ने गांवों, कस्बों को भी अपने में समेट लिया था। मारकाट, आगजनी, घृणा, द्वेष, क्रोध, प्रतिशोध से समाज ग्रस्त बन गया था। जिसपर सांप्रदायिकता रूपी "तमस" छा गया था।

भीष्मजीने अपनी यादे बताते हुए कहा है - "1926 में पहला दंगा हुआ था। उन दिनों भी दंगा करवाना हाकिमों के लिए कोई मुश्किल बात नहीं हुआ करती थी। पुलिस के घेरे अफसरों द्वारा दंगे करवा दिये जाते थे। अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर का छोटा-सा इशारा काफी हुआ करता था और दंगा भड़क उठता था।"[52]

राष्ट्रीय आन्दोलन में काँग्रेस सक्रिय थी। इसमें कुछ मुसलमान लोग भी थे। निष्ठा के पक्के मुसलमानों की अन्य मुसलमान निंदा एवं भर्त्सना करते थे। उन्हें "काँग्रेस का कुत्ता" कह देते थे। और कांग्रेस को हिन्दुओं की जमात बताते थे।

सन 1942 के आन्दोलन से लोग बेधडक, निडर बन गये। अंग्रेजों के खिलाफ "छोडो भारत" जोर पकड़ रहा था। इससे अंग्रेज नीति शिथिल बनती गयी। 1947 को भारत आज़ाद हुआ।

3.10 भारत विभाजन और "तमस" :-

भारत विभाजन स्थूल और शारीरिक रूपमें एक दुर्घटना नहीं है। एक मानवीय शोकान्तिका है। जिससे लोगों को मानसिक, शारीरिक यातनाएँ भुगतनी पड़ी। यह दुर्घटना केवल राजनीति या किसी एक विशिष्ठ वर्ग तक सीमित नहीं है। इसमें लाखों, करोडों लोगों की जिंदगी उध्वस्त हुयी है। यह बटवारा अचानक, अप्रत्याशित रूपमें हुआ था। क्योंकि आजादी के पूर्व किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि भारत और पाकिस्तान ऐसे दो हिस्सों में बटवारा होगा।

विभाजन की शोकान्तिका को समझाने के लिए उसकी राजनीतिक सामाजिक और सांप्रदायिक पृष्ठभूमि को देखना बहुत ही महत्वपूर्ण है। 1857 के विद्रोह ने भारतीय जनता की राजनीतिक चेतना विकसित होती गयी। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का विरोध किया। अंग्रेज नीतिने भारतीय जनता के हितों की उपेक्षा की। अंग्रेज अधिकारियों का भारतीय जनता के प्रति व्यवहार अमानवीय था। ब्रिटिश कानून केवल उनके हित के लिए ही बनवाये गये थे। इसमें भारतीय जनता का कोई मूल्य नहीं था।

उनकी हत्या करना एक साधारण कृत्य बन गया था। राष्ट्र के विचारक एवं सुधारवादी लोग शोषण एवं अत्याचारों से क्रोधित थे।

15 अगस्त 1947 को भारत विभाजित हुआ। जिन भयंकर सांप्रदायिक स्थितियों से बचने के लिए विभाजन हुआ वे सांप्रदायिक दंगे तेज बनते गये। अमानवीय हत्याकाण्ड होते रहे। जो नर संहार हुआ वह भारतीय इतिहास की करूण गाथा थी।

मंटो ने लिखा है - "हिन्दुस्तान आजाद हो गया था। पाकिस्तान अस्तित्व में आते ही आजाद हो गया। लेकिन इन्सान दोनों देशों में गुलाम था। सांप्रदायिकता का गुलाम, धार्मिकता का गुलाम, जनून, पशुता अत्याचार का गुलाम था। "इस समय जो दंगे हुए उसमें कितने मारे गये, कितने घायल हुए इसका अंदाजा लगाना आसान नहीं था। इसकी गणना दो लाख से लेकर दस लाख तक गयी थी। इससे जो भय एवं आतंक फैला वह बहुत ही डरावना था।

लाहौर, लुधियाना, अमृतसर, जालंधर, दिल्ली, रावलपिण्डी, गुडगांव में भयंकर दंगे हुए। दिन दहाड़े एक धर्म के लोगोंने दूसरे धर्म के लोगों को मार डाला। हिन्दुस्तान से पाकिस्तान जानेवाली लोगों से खचाखच भरी रेल काट डाली गयी। घरों को, मंडी को आग लगा दी गई। स्त्रियों का अपहरण हुआ। बलात्कार हुए। लोगों में दहशत के कारण असुरक्षा भाव पैदा हुआ, और अपनी जमीन, घर छोड़ देना पड़ा।

भारत विभाजन कितना भयानक था। "तसम" इन भयानक सांप्रदायिकता के हादसे की कहानी है। भीष्मजी ने घटनाओं का प्रत्यक्ष, सीधा सच्चा रूप चित्रित किया है। इसका मूल स्वर मानवीय करूणा है। इसमें झूलसकर भारत के दो टुकड़े, कालांतर में तीन हुए। भारत, पाकिस्तान और बांगला। इन भयानक दंगों से मानवीय मूल्यों की उपेक्षा हो गयी। अखण्डता का स्वप्न खण्ड-खण्ड बन बिखर गया। फूट और अवसरवादी तत्वों को बढ़ावा मिला। अहिंसा नाम के पीछे हिंसा भड़क उठी। सामुहिक हिंसा, लूट खसोट की उथल-पुथल ने व्यक्ति मन की गहराई से लेखक का मन व्याकुल हो उठा। भीष्मजी ने अपने मन की व्यथा "तमस" के रूपमें लोगों के सामने उद्घाटित की। मनुष्य के भीतर छिपे पशुवृत्ति का उद्घाटन इसमें है।

सांप्रदायिकता की समस्या पुरानी है। लेकिन आज भी देश इससे मुक्त नहीं है। 1929 में अलीगढ़, जमशेदपूर और अहमदाबाद में सांप्रदायिक दंगे हुए। और आज उसने भीषण रूप धारण किया है। बाहर से एक खण्ड भारत भीतर से अनेक टुकड़ो में बाँटा हुआ है। पंजाब, आसाम काश्मीर, बिहार, केरल, आंध्र में यही स्थिति है।

"आज इतिहास फिर आपको दोहरा रहा है। सबल और समझदार नेतृत्व के अभाव में यह

पूरा देश आतंक और अराजकता की ओर बढ़ रहा है। पंजाब की स्थिति तो विस्फोटक ही है, बिहार का जाति युध्द, गोरखा लैन्ड का जातिगत अस्तित्व संकट, सारे देश में फैले मुसलमानों का वह असुरक्षा बोध जिसके कारण वह छोटी-छोटी बातों पर भड़क उठते हैं आदि बहुत ही खतरनाक है।"[53]

आज के नेता अपनी कुर्सी बरकरार रखने के लिए सांप्रदायिकता की भावना को भड़काने की कोशिश करते हैं। यह समस्या बहुत ही चिंतनीय है। रामजन्मभूमि - बाबरी मस्जिद इसके ज्वलंत उदाहरण है। यह प्रासंगिकता कल से आज और आज से कल भी जारी रहेगी। जिससे तनाव, अशांति, विघटन, बंटवारा, मनुष्य की दुर्बलता, आपसी वैमनस्य, आर्थिक विषमता, स्वार्थान्धता, दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। जिसके परिणाम स्वरूप न्याय-अन्याय, विवेक-अविवेक, प्रेम-घृणा की विसंगती पायी जाती है।

3.11 अविचार की आंधी और "तमस" :-

"महाभारत के युध्द में अश्वत्थामा ने नारायण अस्त्र का प्रयोग करने का विचार किया तो उसी समय वेदव्यास ने उन्हें रोक दिया। क्योंकि नारायण अस्त्र युध्द का अंतिम अस्त्र था। उसके प्रयोग का अर्थ था विश्व का सर्वनाश। हर प्रकार के युध्द में एक अंतिम अस्त्र होता है। उसका प्रयोग विवेक की अपेक्षा रखता है। आज अणु बम का प्रयोग करते हुए लोग इसलिए डरते हैं। उनके प्रयोग का अर्थ होगा संपूर्ण मानव संस्कृति का संहार।"[54] "तमस" उपन्यास में भी भीष्मजी ने इस अग्नीबाण का जिक्र करते हुए कहा है "अग्नीबाण की यही विशेषता है, वह गिरता नहीं। वह बाण घूमता है, समस्त रणभूमि में घूमता है, घूमता है और चारों ओर से आग की लपटें उठनी लगती हैं। कहीं किसी योध्दा के मुकुट को छू लिया, वहाँ आग की लपट निकलने लगी, किसी रथ के छत्र से जा लगा, छत्र जलने लगा। चारों ओर घूमता हुआ बाण उस समय तक घूमता रहता है, जब तक धू-धू करके चारों ओर आग जलने लगती है। फिर बाण लौट आता है, शत्रु की छावनी को जलाकर विजयी सैनिक की भाँति उसमें से प्रकाश फूट रहा होता है, देखते ही आँखें चुँधिया जाती हैं।"[55] तो अविचार रूपी यह अग्नीबाण अंग्रेजों की ओर से छोड़ा गया था जिसने अपना काम पूरा किया। हमारे पौराणिक अस्त्रों का प्रयोग आज आधुनिक युग में हम अणुबाम के रूप में प्रत्यक्ष देख रहे हैं। जिसमें संपूर्ण मानवजाति नष्ट हो जाने का भय है। एक छोटी सी सुअर मारके मस्जिद के सामने फेंक देने की घटना भीषण मानव हत्या एवं आगजनी का कारण बनी। यह अविचार की आंधी ही विभाजन का कारण बनी, जिसका बुरा परिणाम सभी लोगों को भुगतना पड़ा।

भीष्म साहनी ने विवेक के बारे में कहा है - "विवेक शब्द का अर्थ है 'समझदारी पर आधारित प्रबुध्द चिंतन।' भारतीय बुध्दिजीवी लोग बड़े अजीब ढंग से पश्चिम से आनेवाले हर विचार को

ग्रहण करते रहे हैं। आज भी वे भारतीय संस्कृति और अपनी विरासत को पश्चिम की आँखों से देखते आँकते हैं। प्रत्येक प्राचीन देश में जहाँ बहुत-सी चीजें अच्छी और मूल्यवान होती है, वही बहुत सी चीजें बेकार-कूड़ा-कबाड, जड़ीभूत और मृत बन रही है।"[56] यह अविचारों की आंधी ही है।

हिन्दू-मुसलमान संस्कृति के मिलाफ से भारत में जो परिवर्तन हुए वह कुछ हद तक उपयुक्त ही थे। लेकिन अंग्रेज नीति ने इसमें जो फूट डाली वह विभाजन का कारण बनी। कांग्रेस में मुसलमान लोग भी थे। दोनों मिलकर स्वातंत्र्य की मांग कर रहें थे। अंग्रेजों ने मुसलमानों के मन में असुरक्षा के भाव पैदा किए जिससे "काँग्रेस हिन्दुओं की जमात है" यह भावना पनपने लगी। जिससे मुस्लिम लीग की स्थापना हुयी।

काँग्रेस और मुस्लिम लीग के समर्थकों के बीच तनातनी शुरू हो गयी। कांग्रेस प्रभात फेरी पर निकलते तो मुस्लिम लीग के समर्थक पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाते। चारों ओर इन नारों से समाज गुंज उठता था। जिससे सांप्रदायिकता का जहर फैलना शुरू हुआ। पंजाब, कलकत्ता, नोआखाली, बम्बई में भयावह दंगे हुए। हाहाकार, मारकाट, आगजनी, लुटमार से समाज का वातावरण आंतकित हुआ। यह दंगे राष्ट्र के शरीर पर गहरा जख्म छोड गये। इसमें अनेक बेगुनाह लोगों की जाने गयी।

"धर्म के नामपर भड़काया हुआ आदमी जनूनी बन जाता है। तब सारी मानवीयता और सद्भावना धरी की धरी रह जाती है। धर्म के नाम पर केवल हमारे ही देश में लोग भड़क उठते हैं ऐसा नहीं है, पर हमारी स्थिति और देशों की स्थिति से अलग है। हमारा इतिहास, हमारे देश में बसनेवाले कितनी ही जातियों, धर्मो, भाषाओं, नस्लों के लोग, जो हर शहर, हर कस्बे में पाये जाते हैं। वे अलग अलग इलाकों में नहीं रह रहे हैं। आज इसलिए स्थिति संकटपूर्ण हो उठी है, कि भड़कावा बढ़ रहा है। और इस भड़कावे के जोर पर विसर्जनवादी शक्तियाँ बराबर सिर उठाती जा रही हैं। ये विसर्जनवादी तत्व धर्मावलम्बी हो ऐसा नहीं है, इनमें गुंड भी है, सत्ता हथियाने की ललक रखनेवाले लोग भी है, केवल वे धर्म की आड़ में काम कर रहे हैं।"[57]

"आज की देश की स्थिति अच्छी नहीं है। शासक और जनता दोनों ही इस के लिए जिम्मेदार है। ऐसा लगता है कि हम देशप्रेम का नारा लगाते लगाते देश से बहुत दूर चले गये है। हमारे पास रह गया है हमारा स्वार्थ, प्रांत, धर्म और जाति प्रेम। यही हमारे लिए देशप्रेम का प्रतीक है। यदि गाय भारतीय संस्कृति का प्रतीक है और उसके वध से संस्कृति को क्षति पहुंच रही है तो जो व्यापक भ्रष्टाचार देश को ग्रस रहा है उससे क्या संस्कृति समृध्द हो रही है? मनुष्य मनुष्य में, पीढ़ी-पीढ़ी में, घृणा और द्वेष की जड़े गहरी हो रही हैं। क्या ये धर्म की समृध्दि के लक्षण है?"[58]

हमारा समाज अविचारों के गर्त में धीर मानवता का खून कर रहा है। हमारा भारतीय धर्म

सब जीवोंपर दया करने के लिए कहता है। इस जीवों में मनुष्य श्रेष्ठ है। इस कारण मानवता एवं मानव की रक्षा हमारा आद्य कर्तव्य है। मानव की कमजोरियों को पहले, दूर कर मानव कल्याण का कार्य महान कार्य है। वेदों में, कुराणों में, बाईबल में मानवजाति को ऊपर उठाने की प्रेरणा दी है। मानव के लिए 'समन्वय' शब्द महत्वपूर्ण है। सहिष्णुता मानव के लिए चाहिए तभी वह उदात्त विचारों का बन सकता है। नहीं तो आये दिन ऐसी शोकान्तिका हमेशा होती रहेगी।

श्रध्दा और बुध्दि का संतुलन जीवन को उपयुक्त होता है। जाति-भेद, उच्च-नीच, गरीब-श्रीमंत इसकी कसौटीपर कस उसमें एकता एवं समानता नहीं बनती। म्लेच्छ, कराड़ा एक दूसरे को संबोधन करने से हीनता की भावना और भी बढ़ जाती है। या द्वेष और घृणा का भाव मनमें पैदा होकर आदमी कुकृत्य करने के लिए उद्युक्त होता है। 'तमस' में ऐसा ही हुआ है। धार्मिक कट्टरतावाद से सांप्रदायिकता का जन्म हुआ। गाय एवं सुअर मारना यह धार्मिक भावना संघार्षों को प्रोत्साहित करती है। 'धार्मिक संघर्ष जबतक रहन-सहन, आचार-विचार, संस्कार तथा अभिरूचि के संघर्ष को अपने में समाहित नहीं कर लेता, तब तक उसकी सांस्कृतिक धरातल पर व्यापक भूमिका नहीं बन पाती।'[59] इसी अविचारों से समाज विकृत बनता है। तो उसमें विचारों की सहिष्णुता होनी चाहिए।

3.12 ऐतिहासिक संदर्भ और 'तमस' :-

'तमस' में चित्रित युवक रणवीर अपने गुरू देवव्रत के द्वारा वीरों की कहानियाँ सुना करता था। 'शहर के आस-पास के पहाड़ों को देखता तो उनपर उसे कभी चेतक घोड़ा दौड़ता नजर आता कभी चट्टान पर घोड़े की पीठ पर बैठे शिवाजी नजर आते।'[60] इनकी कहानियाँ सुनकर रणवीर उत्साहित एवं प्रेरित होता था। उसके गुरू भी उसकी दृढ़ता, संकल्प शक्ति को बढ़ा देने की कोशिश करते थे। रणवीर अपने 'शस्त्रागार' में उसी प्रकार टहलता जैसे औरंगजेब के साथ लोहा लेने से पहले शिवाजी महाराज टहलते थे।

शिवाजी के बारेमें दिनकरजी ने जो स्पष्टीकरण दिया है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। शिवाजी महाराज सांप्रदायिक समझे जाते हैं, किन्तु उनके सांप्रदायिक होने का हमें कोई प्रमाण नहीं मिला। अपने सारे जीवन में उन्होंने एक भी मस्जिद लुटवायी हो, इसका कोई भी सबूत इतिहास में नहीं है। एक बार लूट के माल में उन्होंने कुरान शरीफ की एक प्रत देखी और वे अपने शिपाहियों पर नाराज हो उठे। कुरान की प्रति जिसके घर से लायी गयी थी, उसीके घर वह पहुँचादी,एक बार ऐसा ही हुआ कि उनके सिपाही कल्याण के सूबेदार का घर लूटकर, लूट के माल में सूबेदार की बेटी को भी साथ ले आये। शिवाजी महाराज ने इस पर बड़ा ही पश्चाताप प्रकट किया और उस युवती को उन्होंने इज्जत के साथ डोली में बिठाकर उसके घर भेज दिया। बहन की विदाई में उस युवती को उपहार में उन्होंने 'दो' गांव भी दिये। इस घटना से उनके उदात्त व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

अपने शिपाहियों को शिवाजी ने कड़ी हिदायतें दे रखी थी, कि लड़ाई या लूट के प्रसंग में मस्जिद, कुरान और नारी की बेइज्जती नहीं होनी चाहिए। शिवाजी के समय के जो कागजात मिले हैं, उन्हें देखने से ज्ञात होता है कि शिवाजी का उद्देश्य इस्लाम का अनादर नहीं, केवल "हिन्दवी स्वराज्य" का संस्थापन था। उन्होंने तलवार अत्याचार का विरोध करने को उठायी थी, और चूँकि अत्याचारी शासक मुसलमान थे। इसलिए लोगों ने, गलत ढंग से शिवाजी महाराज को सांप्रदायिक मान लिया। शिवाजी ने अंग्रेज लोगों का भी विरोध किया था। राणा प्रताप ने भी यही कार्य किया था।

निष्कर्ष :-

सांप्रदायिकता हमारे इतिहास एवं वर्तमान जीवन की त्रासदी है। देशकी स्वतंत्रता के 46 वर्ष बाद भी भारत के नागरिक सांप्रदायिकता को खत्म नहीं कर सके हैं। आज भी देश के भीतर सांप्रदायिक ताकतों की खतरनाक भूमिका चल रही है। आम जनता मानवीय दृष्टिकोण की अपेक्षा मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारों तक ही अपना ध्यान सीमित रखती है। जिससे भारत की एकता विभाजित होती जा रही है। धर्म के नामपर लोग आपस में झगड़ते हैं।

धर्म आदमी के लिए आवश्यक तत्व है। धर्म के कारण ही आदमी का जीवन सुसंगत बनता है। मानव जीवन को उदात्त बना देता है। धर्म के कारण मानव मन में भक्ति का उदय होता है। धर्म दो प्रकार का होता है। साधारण विशेष धर्म। साधारण धर्म वही है जो हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई कहलाता है। और विशेष धर्म वही है जो मन, अवस्था, काल में रहता है।

धर्म का विशेष पथ ही संप्रदाय है। धर्म के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पथ की आवश्यकता होती है। धर्म आत्मा है तो शरीर संप्रदाय है। और सभी शरीरों में एक ही आत्मा होती है। तो हमारा मुख्य धर्म है "मानव धर्म" और विभिन्न संप्रदाय उस आत्मा के 'पथ' है। रास्ते है, जिससे मानव को आगे बढ़ना है अपने कार्यों को सफल करना है।

इस भूमिपर अनेक धर्मों का निर्माण हुआ। लेकिन भारतीय सनातन धर्म द्रविडों के इतिहास में पाया जाता है। भारत की संस्कृति एक ही जाति की संस्कृति नहीं है। भारत भू पर अनंत काल से अनेक जातियों एवं लोगों का समन्वय हुआ है। भारतीय समाज का परिवेश लोक जीवन एवं रहन-सहन से सभी एक ही नस्ल के लोग लगते हैं। उनके लिए सांप्रदायिक भेदभाव निरर्थक है। संप्रदाय बदलते हैं मिटते भी हैं। लेकिन धर्म उसी तरह नष्ट नहीं हो सकता। धर्म की विकृतावस्था ही समाज का पतन है, -हास है।

भारत में सभी संप्रदायों के लोग रहते हैं जो सभी एक ही नस्ल के लोग हैं। नाक नक्श सब के एक जैसे हैं। उनका रंग-रूप, वेष, रहन-सहन, भाव-विचार और जीवन दर्शन एक ही जैसा

है। रक्त, भाषा, संस्कृति का मिलाप इसमें है। द्रविडी, आर्य, मंगोलियन आदि जातियोंका संकर इसमें पाया जाता है। लेकिन वे सभी लोग आज अपना इतिहास भूल गये हैं। वे अविवेक से अनुदारता का परिचय देते हैं। जिसकी वजह से उनमें संघर्ष होता रहता है। परस्पर घृणा, द्वेष, स्वार्थ, अहंकार से ग्रस्त बने हुए हैं।

हिन्दू जाति के लोग मानसिक धरातलपर उदार होते हैं। किन्तु आचार के धरातलपर वे मनुष्य-मनुष्य में भयानक भेद मानते हैं। वे मुसलमानों को तुच्छ समझते हैं। आचरण के स्तरपर वे संकीर्ण वृत्ति के लोग हैं। इनके विपरित मुसलमानों में इमान एवं उदारता होती है किन्तु वे कट्टरवादी होते हैं। दुर्भाग्यवश इन दोनों में आत्मिक एकता कम होती गयी। दोनों जातियाँ भी अपने धर्म को श्रेष्ट सिध्द करने की कोशिश करने लगे। परिणामस्वरूप इनमें तनाव अलगाव, मजहबी अन्धता, प्रांतीयता, भेदनीति, सांप्रदायिकता की प्रवृत्ति बढ़ती गयी। इन सभी तत्वों के कारण राष्ट्रीय शान्ति नष्ट हुयी। राष्ट्र अन्दर ही अन्दर टूटता गया।

इस प्रकार दुर्बल राष्ट्र को प्रबल शत्रू शीघ्र ही अपना निशाना बना लेता है, वही कार्य अंग्रेजों ने किया। भारतीय महान संस्कृति विशृंखल बनी। पाश्चात्य प्रभाव से उसमें परिवर्तन आया। राजनीतिक संघर्ष, आर्थिक पतन, समाज विघटन से संस्कृति विकृत बनी। और अमानवीय स्तरपर सांप्रदायिकता का जन्म हुआ। मानवता की हत्या होने लगी। खण्डीत दृष्टिकोण के कारण मानव ने ही मानव को दूर रखा। वह व्यक्ति-व्यक्ति में विभाजित होता गया।

वैदिक ऋचाओं की पावन प्रेरणा को भुलाकर, निरंतर राष्ट्रीय शान्ति को क्षुद्र स्वार्थ के कारण भंग किया गया। मनुष्य "मैं" में सीमित हो गया। "मैं" मुसलमान "मैं" श्रेष्ठ, "मैं" हिन्दू "मैं" श्रेष्ठ, "मैं" ईसाई "मैं" श्रेष्ठ, "मैं" सिक्ख "मैं" और मेरा धर्म श्रेष्ठ यह भावना पनपने लगी। मानव धर्म नष्ट हो गया। दया, करूणा, शान्ति एवं आपस में मेल नष्ट होने लगा। विशालता का स्थान संकुचित वृत्ति ने ले लिया।

इस्लाम, हिन्दू, सिक्ख, इसाई धर्मोंका पूर्व इतिहास देखने से यह बात स्पष्ट होती है कि किसी भी धर्म के तत्व इतने हीन नहीं हैं, जितने आज दिखाई देते हैं।

"इस्लाम" शब्द का अर्थ होता है शांति में प्रवेश करना। इससे मनुष्य भगवान की शरण लेता है। और मनुष्य के प्रति अहिंसा एवं प्रेम का बर्ताव करता है। उनके विचार उदात्त है। लेकिन इन्हीं प्रषितों ने भारतीय लोगोंपर जो अत्याचार किए वे इतने भयानक और अमानवीय थे जिन्हें भूलाए पर भी भूला नहीं जाता। क्योंकि इतना अत्याचार सारे संसार में किसी भी जाति ने नहीं किया होगा।

हिन्दू लोग जन्मतः अहिंसावादी होते हैं। यहाँ बाहय लोगों ने जो आक्रमण किया वह केवल

मित्रता के नाते ही किया। सबसे पहले हिन्दू-मुसलमान संबंध मैत्री पूर्ण रहें हैं। लेकिन हिन्दुओं के मनमें भयंकर घृणा का भाव महम्मूद गजनी की क्रूरता से पूर्ण आक्रमण से आरंभ हुआ। उसने हिन्दुओं के मदिरों का विध्वंस किया। उनकी धार्मिक भावनाओं की अवहेलना की। उनकी कोशिश यह थी कि भारतीय जनता इस्लाम कबूल करें। परिणामतः हिन्दुओं का अहंकार बढ़ता गया। और वे प्रतिशोध की भावना से भड़क उठें।

सिक्ख धर्म तो निराकारवादी था। उनका धर्म शुध्द धर्म (खालसा धर्म) हैं। उनका पंथ सरल, सुकुमार एवं विनयपूर्व था। उसमें व्यावहारिकता एवं प्रगतिशील भावना का महत्व होता है, गुरू को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया जाता है। सिक्ख धर्म के दस गुरू माने गये हैं। इनके पांचवे गुरू अर्जुनदेव के साथ जहांगीर ने जो अत्याचार किया तभी सिक्खोंने पहली बार यह अहसास किया कि केवल सनातन मार्ग एवं जपमाला से धर्म की रक्षा नही होगी, इसके लिए तलवार की आवश्यकता है। और हरगोविंदसिंह ने सिक्ख संप्रदाय को सैनिक रूप देना आरंभ किया। और शांति-प्रिय सिक्ख धर्म में सामरिकता आ गयी। और सिक्ख - मुसलमान भेदभाव बढ़ता गया। सिक्खों की वीरता देख, हिन्दू भी उनसे प्रभावित हो गये। और उनहें रक्षक के रूपमें देखने लगे।

ईसाई धर्म के प्रचारार्थ यूरोप के लोग इसी भारत भूमि पर आयें। ईसाई इस देश को यूरोप बनाना चाहते थे। लेकिन हिन्दू-मुसलमानों ने समझौता कर उनके खिलाफ आवाज उठायी। अंग्रेज तो मुसलमानों को राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग रखना चाहते थे। इन दो जातियों में 'फूट डालो और राज करों' यही उनकी नीति थी। उन्होंने बड़ी चतुराई से धर्म के नामपर हिन्दू-मुसलमानों को भड़का दिया। जिससे देश की एकता टूट गई और दासता ने अपने पैर जमाए।

परिणामतः कॉंग्रेस और मुस्लिम लीग की स्थापना हुयी। सब से पहले कॉंग्रेस में हिन्दू मुसलमान दोनों थे। लेकिन बाद में मुसलमान लोग कॉंग्रेस को हिन्दुओं की जमात कहने लगे। कॉंग्रेस के सदस्यों में भी परस्पर मेलजोल नही था। स्वार्थी तथा आपमतलबी लोगों की भरमार थी। राष्ट्रीय नेतृत्व की विफलता के परिणाम देश को भुगतने पड़े। देश का विभाजन हुआ।

भारत विभाजन एक मानवीय दुर्घटना है। यह दुर्घटना लाखों-करोंडो लोगों का जीवन उध्वस्त कर गयी। विभाजन की पृष्ठभूमि बहुत ही भयावह थी।

अंग्रेज नीति एवं साम्राज्यवाद का लोगों ने विरोध किया। क्योंकि अंग्रेजी अधिकारियों का भारतीय जनता के प्रति व्यवहार अमानवीय था। उनके ही हित के लिए थे। भारतीय जनता की कोई कीमत नही थी। हमारे यहाँ के सुधारकों ने राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का संदेश दिया। मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की मांग की। सांप्रदायिकता की राजनीति पर चलकर घृणा और शत्रूता बढ़ती गयी।

पूरे भारत में जगह - जगह सांप्रदायिक दंगोंने भीषण रूप ले लिया। देश ऐसी स्थितिपर आ पहुंचा कि विभाजन के सिवाय कोई विकल्प नहीं था। अंत में 15 अगस्त 1947 को भारत और पाकिस्तान दो हिस्सों में बाँटकर देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुअी।

इस समय जो दंगे हुए उसमें कितने मारे गये, कितने घायल हुए इसका अंदाजा लगाना आसान नहीं था। इसकी गणना दो लाख से दस लाख तक की गई है। देश का माहौल आतंक एवं तनाव पूर्ण बना था। दिन-दहाड़े एक धर्म के लोगों ने दूसरे धर्म के लोगों को मार डाला। मारकाट, आगजनी, लूट-पाट, बलात्कार अत्याचारों से दहशत निर्माण हुयी। लोगों में असुरक्षा के भाव निर्माण हुए।

"तमस" इस सांप्रदायिक हादसे की कहानी है। जिसमें भीष्म सहानी जी ने घटनाओं का अंकन किया है। इसका मूल स्वर मानवीय करूणा है। ऐसे दंगों से मानवता की हत्या होती है। अखण्डता का स्वप्न खण्ड-खण्ड होकर बिखर जाता है। फूट और अवसरवादी तत्वों को बढ़ावा मिलता है। अहिंसा नाम के पीछे हिंसा भड़क उठती है। मनुष्य के भीतर छिपी पशुवृत्ति का उत्थान होता है। जिससे क्षूद्र स्वार्थ, अविवेक, भेदनीति, अलगाववाद, मजहबी अंधता, प्रान्तीयता, देशद्रोहिता ऐसे तत्व जो हिंसक प्रवृत्तियों को प्रेरित कर आतंक एवं राष्ट्रीय असुरक्षा उत्पन्न करते हैं।

उपन्यासकार ने सांप्रदायिकता और विभाजन से जुड़े जीवन सत्य के पर्याप्त आयामों को उद्घाटित किया है। यह एक गंभीर कृति है। क्योंकि 20 वी सदी में आज भी देश के भीतर सांप्रदायिक ताकतों की खतरनाक भूमिका चल रही है। मानवी मन मानवता से हटकर मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारों तक सीमित रूप अपना रहा है। इसके लिए सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार होती है। पूरे भारतीय समाज की एकता नष्ट होने की संभावना है।

"तमस" में जिस इतिहास का चित्रण है, वह हमारा जीवित वर्तमान है। इतिहास में अंग्रेजी सभ्यता ने हमें विभाजित किया। कौमी भावना में फूट डाली। एकता को सांप्रदायिकता का रंग दिया। भारत की जनता में हिन्दू - मुसलमान और सिक्ख आदि रूप दिखलाये लेकिन उनके भीतर की मानवता नहीं दिखलाई। भारतीय जनता को उन्होंने सत्ता एवं दास्य भाव से ही देखा। उसे मालूम था कि सभी एक ही नस्ल के लोग है, फिर भी इन्हें धर्म के नामपर भड़का दिया और उनमें फूट डाली। भारतीय जनता की विभिन्नताओं को उकसाकर अपना उल्लू सीधा कर दिया।

"तमस" में अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड अपनी पत्नी को इन लोगों का इतिहास बता देता है। लीजा उसे कहती भी है कि तुम उन्हें धर्म के नाम पर भड़का देते हो। "तमस" में सुअर मार मस्जिद के सामने फेंक देने की चाल भी उसकी ही थी। जिससे हिन्दू मुसलमानों में दंगे भड़क उठते है। मुसलमान हिन्दुओं की धार्मिक भावना को भड़काने के लिए गाय की हत्या कर देते है। भीषण

आगजनी, मारकाट, लूट-फाट से माहौल तनावपूर्ण बनता है। और यह अंग्रेज अधिकारी चूप्पी साधे बैठते हैं। पहले-पहल इस में कोई हस्तक्षेप नहीं करते है। वे केवल निजी लाभ एवं हित ही देखते हैं। अंग्रेज नीति के शिवाय भीष्मजी ने यह प्रश्न भी उपस्थित किया है कि, क्या सिर्फ अंग्रेज ही इसके लिए जिम्मेदार थे? हमारे समाज के स्वार्थी लोग भी इसके लिए जिम्मेदार थे। इसमें सांप्रदायिक, अवसरवादी, सफेद पोश लोग भी थे, जिनके कारण यह विभाजन हुआ। आज आज़ादी के बाद भी परिस्थितियाँ वैसी ही है जैसे पहले थी। देश स्वतंत्र होकर भी जनता स्वतंत्र नहीं है।

"तमस" वास्तविक समग्रता को परिचित कर देनेवाली महान एवं गंभीर कृति है। इसमें मूल संस्कृति का रूप विकृत कैसे बना? इसका अनेक संदर्भों द्वारा परिचय दिया है। जो धार्मिकता को त्याग मानवता की माँग करता है। परस्पर वैर भाव के परिणाम कितने भीषण होते है। इसमें गरीब आम जनता को जो भुगतना पड़ता है, जिससे मानव एवं राष्ट्र की ही हत्या होती है। इसका स्पष्टीकरण यथार्थ रूप में करने में उपन्यासकार सफल बने हैं।

- - -

3.14 संदर्भ सूची :

1. डॉ. लाजवंती भटनागर : "धर्म संप्रदाय और मीरा का भक्तिभाव" पृ. 12.
2. वही पृ. 16.
3. रामधारी सिंह "दिनकर" : "संस्कृति के चार अध्याय" पृ. 671
4. वही (राधाकृष्णन् का वक्तव्य है) पृ. 673.
5. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 39.
6. रामधारी सिंह "दिनकर" : "संस्कृति के चार अध्याय" पृ. 739.
7. वही पृ. 741
8. अशोक पाल, कृष्णा पाल : "हमारे निबंध" पृ. 12.
9. डॉ. रमेश तिवारी : "हिन्दी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन" पृ. 239
10. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 59.
11. भीष्म साहनी : "अपनी बात" पृ. 137.
12. वही पृ. 75.
13. विष्णु प्रभाकर : "जन, समाज और संस्कृति" पृ. 78.
14. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 209.
15. वही पृ. 221.
16. वही पृ. 110.
17. वही पृ. 111.
18. वही पृ. 118.
19. वही पृ. 230.
20. वही पृ. 236.
21. दिनकर : "संस्कृति के चार अध्याय" पृ. 399.
22. वही पृ. 402.
23. वही पृ. 400.
24. वही पृ. 401.
25. वही पृ. 401.
26. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 190.
26. वही पृ. 192.

27. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 192.
28. वही पृ. 170.
29. वही पृ. 49.
30. वही पृ. 255.
31. वही पृ. 255.
32. दिनकर : "संस्कृति के चार अध्याय" पृ. 303.
33. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 66.
34. वही पृ. 68.
35. दिनकर : "संस्कृति के चार अध्याय" पृ. 304.
36. वही पृ. 305.
37. भीष्म साहनी : "अपनी बात" पृ. 165.
38. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 35.
39. वही पृ. 35.
40. वही पृ. 20.
41. वही पृ. 90.
42. वही पृ. 91.
43. वही पृ. 23.
44. वही पृ. 24.
45. वही पृ. 58.
46. वही पृ. 280.
47. महिपसिंह : "संचेतना" दिसंबर 1988 पृ. 18.
48. वही पृ. 18.
49. दिनकर : "संस्कृति के चार अध्याय" (एम.एन. राय का कथन) पृ. 261.
50. वही पृ. 726.
51. वही पृ. 728.
52. भीष्म साहनी : "अपनी बात" पृ. 166.
53. महिपसिंह : "संचेतना" जनवरी 1987 पृ. 18.
54. विष्णु प्रभाकर : "जन, समाज और संस्कृति" पृ. 80.

55. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 73.

56. भीष्म साहनी : "अपनी बात" पृ. 139-140.

57. वही पृ. 171-172.

58. विष्णु प्रभाकर : "जन, समाज और संस्कृति" पृ. 82.

59. डॉ. रमेश तिवारी : "हिन्दी उपन्यास साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन" पृ. 252.

60. भीष्म साहनी : "तमस" पृ. 72.

- - -